

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

वर्ष 45 अंक 1

21.02.2022 सोमवार (जनवरी-फरवरी)

वार्षिक शुल्क : ₹ 111.00

महाप्रभु र्यामिनारायण प्रणीत सनातन, रघेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्त्वांग पत्रिका



# भगवान् कृष्ण



योगीबाया की करोड़ों धन्यवाद, काकाजी हमें भेंट दिये...

निष्पात्मानं ब्रह्मस्त्वं देहत्वयिन्द्रियास् । विभाष्य तेन कर्त्त्वा श्रीजी भक्तिस्तु सर्वदा ॥

22 दिसंबर 2021 ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी के समाधि स्थल पर दर्शन-प्रदक्षिणा...



## गुणातीत समाज के अविस्मरणीय यर्व...

3 फरवरी गुणातीत समाज के आध्यात्मिक इतिहास का अद्वितीय दिन है! क्योंकि **गुरुहरि योगीजी महाराज** ने तब संकल्प किया था कि गुणातीतभाव को पाये अपने संतों के द्वारा धरा पर अखंड रहने का भगवान् स्वामिनारायण ने जो वरदान दिया है, उसकी प्रतीति संबंध में आने वाले ज्ञानी-अज्ञानी सभी को कराने, उन्हें मूर्ति का सुख दूँ।

पर, ऐसे विरल कार्य के लिये कोई शूरवीर पात्र तो चाहिये न! सो, उन्होंने अनादि के ऐसे महामुक्त को चुना और वे थे प.पू. काकाजी!

छोटी आयु में ही उन्होंने गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज के मुख से सुना था –

**जिसे प्रभु की मूर्ति का सुख प्राप्त करना हो, वह मर कर आये।**

अर्थात् स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर के भावों से पर होकर आए। वाक़ई असाधारण हेत का स्वरूप प.पू. काकाजी ऐसे ही थे। बाह्य दृष्टि से वे किसी भी क्रिया में संपूर्णतया ओतप्रोत दिखाई देते। लेकिन, वह पूरी होने के बाद उसका तनिक भी पाश उनमें दिखाई नहीं देता। जैसे कि जब वे व्यापार करते थे, तो उसमें इतने मशगूल दिखते कि ऐसा लगता कि इसमें से वे कभी बाहर ही नहीं आयेंगे। लेकिन, प.पू. बापा के वचन से श्री गुलजारीलाल नंदाजी के चुनाव प्रचार के लिये जब जाना हुआ, तो व्यापार को एक ओर रख कर, ऑफिस के पूरे स्टाफ के साथ वे उस सेवा में जुट गये। फलस्वरूप खूब राजी होकर प.पू. बापा ने उन्हें प्रभु का साक्षात्कार कराया, जिसमें उन्होंने प.पू. बापा में असली नारायण को देखे।

आज यह सब कहना या लिखना आसान है, पर सोचें कि ऐसी स्थिति में क्या हम अपनी महत्त्वाओं को छोड़ कर ऐसा कर पायेंगे?

यूँ तो प.पू. काकाजी का संपूर्ण जीवन, उनकी प्रत्येक क्रिया हम सभी के लिये आदर्श रूप हैं, पर साक्षात्कार के इस प्रसंग पर प्रार्थना करें कि जैसे प.पू. काकाजी ने अपने ईष्टदेव से अतिशय प्रीति की, वैसे हम भी अपने प्रत्यक्ष स्वरूप से कर पायें।

प.पू. काकाजी के साक्षात्कार दिन के तुरंत बाद ही आई 5 फरवरी – बसंतपंचमी की मंगल तिथि भी भगवान् स्वामिनारायण द्वारा इसी दिन रचित **शिक्षापत्री** और **गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज** के प्रादुर्भाव के कारण पूरे स्वामिनारायण

संप्रदाय एवं अक्षरपुरुषोत्तम संस्था व गुणातीत समाज के लिये अत्यंत महत्वपूर्ण है।

गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज की निष्काम भक्ति और अडिग साधना का परिणाम है कि अनेक विघ्न और कष्ट सहन करके, उन्होंने अक्षरपुरुषोत्तम की शुद्ध उपासना व्यापक करने बोचासण में सर्वप्रथम श्री अक्षरपुरुषोत्तम की मूर्ति स्थापित की। फलस्वरूप श्रीजी महाराज एवं अनादि मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी के पृथ्वी पर अवतरित होने का हेतु उजागर हुआ। प्रबल सत्यनिष्ठ गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने जब जीव को उच्च ब्राह्मीस्थिति का एहसास करवाने के लिये युगल उपासना का बिगुल बजाया, तब एक हरिभक्त ने उनसे कहा—

‘आपका प्रभाव और प्रकाश देख कर कई मुमुक्षु आपकी ओर आकर्षित होते हैं। पर, कहाँ को आपके प्रति राग-द्वेष है, सो वे आपके लिये परेशानी खड़ी करें, ऐसा प्रतीत होता है।’

तब गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने कहा था—

‘हम यदि किसी क्रिया से बंधे होंगे, तो उसका भार हमें लगेगा। लेकिन कर्ता-हर्ता यदि श्रीजी महाराज को समझेंगे, तो महाराज हम पर आँच भी नहीं आने देंगे। फिर भी यदि कोई दुःख आये, तो समझना कि श्रीजी महाराज कसौटी कर रहे हैं और शुद्ध कंचन जैसा हमें बनायेंगे।’

गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज के उपरोक्त अभय वचन केवल शुद्ध उपासना के संदर्भ में नहीं, बल्कि अध्यात्म जीवन जीते सभी श्रेयार्थी साधकों के लिये दीपस्तंभ के समान हैं। बाह्य जगत् तो सत्पुरुष सहज ही छुड़ा देते हैं, लेकिन जब अंतर्जगत् उथल-पुथल मचाये-तांडव करे, तब हमें दिखती परेशानियों का नियंता प्रभु को मान कर, एक मात्र भजन का उपाय लें, ऐसी गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज की प्राकट्य तिथि पर दो हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें और...

साथ ही साथ 15 फरवरी स्वरूपनिष्ठा व माहात्म्य भक्ति के स्वरूप

प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी के प्राकट्य पर्व पर उनसे याचना करें कि

संपूर्ण समर्पण करके जिस प्रकार आपने

भक्त का मित्र बन कर,

भक्त का सहृदयी बन कर,

भक्त के हृदय में स्थान लेकर,



भक्त का हितैषी बन कर,

भक्त का निजी बन कर,

भक्त को अपनत्व देकर,

भक्त का भक्त बन कर,

प्रभुधारक संत स्वरूपों—प.पू. योगीबापा, प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. महंतस्वामीजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी के अंतर की प्रसन्नता पाई, ऐसी भक्ति की लौ हमारे भीतर में प्रज्वलित करने हम सक्षम बनें-ऐसा नम्र निवेदन करते हुए, मागंलिक पर्वों निमित्त आशिष प्राप्त करने **प.पू. काकाजी** के निम्न आशीर्वाद बार-बार पढ़ें। क्योंकि प.पू. काकाजी अक्षरधाम की विरल विभूति थीं; सो उनकी प्रत्येक क्रिया और परावाणी इस लोक की तो थी ही नहीं, जिसे हम हमारी माध्यिक बुद्धि से समझ भी पायें। लेकिन, वे इतने दयालु हैं कि हमारी सुरुचि देख कर हमें सूझा दे ही देंगे।

**पातंजल** योग के अनुसार ‘चित्तवृत्ति का निरोध’ अष्टांगयोग का फल है।

साकार और निराकार दोनों प्रकार की उपासना करने वाले

सविकल्प समाधि द्वारा निर्विकल्प समाधि सिद्ध कर सकते हैं।

लेकिन उनके दोष और अहंभाव निर्मूल नहीं होते।

भगवान के संबंध वाले ये भक्त, निर्गुण होने के बावजूद, स्वभावयुक्त ही वर्तते हैं।

उनकी मूल वृत्ति या अज्ञान टलता नहीं है।

जबकि, **गुणातीत ज्ञान** की सर्वश्रेष्ठ विशेषता यह है कि—

**प्रगट भगवान् या उन्हें आत्मसात किये हुए**

**संत के प्रति सद्भाव रखने से जीव निर्वासनिक हो जाता है**

और

बड़े पुरुष के वचन से भजन, भक्ति व सेवा करते हुए,

जीतेजी ही एकांतिक धर्म भी सिद्ध कर लेता है।

ज्ञानप्रलय का ये भजन सच्चे भगवदी के वचन और प्रसंग से

स्वरूप की स्मृति रखने वाले को सिद्ध होता है।

ऐसा अखंड दिव्य जाग्रतता का योग अंतः ज्ञानसमाधि में परिवर्तित हो जाता है।

प्रगट के प्रति गुणातीत ज्ञान की दृढ़ निष्ठा करने के लिये

मुक्तों को तीन कसौटियों में से गुज़रना पड़ता है।

## प्रथम कसौटी में—

प्रगट की यथार्थ रूप से पहचान और निष्ठा की कसौटी—जिसमें लोक, भोग, देह के संबंध और पक्ष अंतराय करा कर देश-काल लगा देते हैं। अतः उसे निरंतर जाग्रत रहना पड़े।

## आगे जाते, दूसरी कसौटी में—

अव्यक्त रागों और संकल्प की बीमारी (अर्थात्— इच्छाओं, कामनाओं व कल्पनाओं के रोगों को) ठालना शेष रहता है। इस भूमिका में बुद्धि, आत्मनिष्ठा, वैराग्य, तप, त्याग, स्वधर्म या किसी भी प्रकार का गुण अथवा क्रिया का अहं आड़े आता है और प्रगट स्वरूप की ही अनुवृत्ति के अनुरूप जीवन जीने में अंतराय उत्पन्न करता है। तब मुक्तभाव की मानरूपी महामाया बाधा डालती है। यह भी स्वरूप की स्मृति रख कर और एकांतिक का प्रसंग एवं उनकी सेवा व समागम करने से निर्मूल हो जाती है।

## अंतिम तीसरी कसौटी में—

मूल अज्ञान या मूल प्रकृति के सहजता से टलने पर, वृत्तियों के निर्मूल होने से महिमा का साक्षात्कार सिद्ध होता है। तब समग्र सत्यसंग दिव्य माना जाता है और स्वयं अक्षरधाम के सुख का जीतेजी अनुभव, अनुभूति प्राप्त करके अन्यों को भी प्रदान कर सकते हैं। फलस्वरूप, आठों प्रहर अहोहोभाव, पूर्णता, कृतार्थता महसूस होती है और किसी का भी अभाव-अवगुण दिखाई नहीं देता और विक्षोभ या उदासी टिक नहीं पाती। निर्दोषबुद्धि रख कर, केवल गुरुमुखी वर्तने वाले साधक के लिये यह सरल व सुगम होता है।

ऐसा साक्षात्कार गुरुहरि की कृपा से, ऐसी ज्ञानसमाधि के रूप में, सब श्रेयार्थी साधकों को शीघ्र सिद्ध हो यही अभ्यर्थना।

— गुरुहरि काकाजी महाराज, मार्च 1969



24 दिसंबर 2021  
सांकरदा मंदिर के दर्शनार्थ...

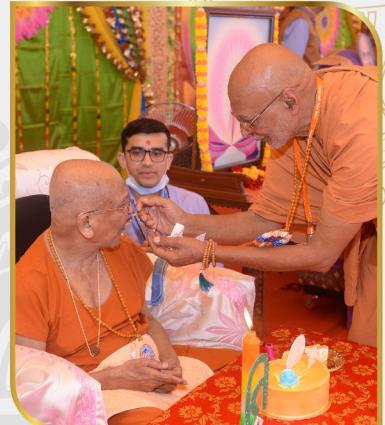


25 दिसंबर 2021

गुरुहरि पव्याजी महाराज के 105वें ग्राकृत्योत्सव निमित्त संतों-भाइयों की सभा



‘गुरुहरि पप्पाजी स्मृति सौरभ उत्सव’ पर  
स्वरूपों-संतों का अभिवादन...

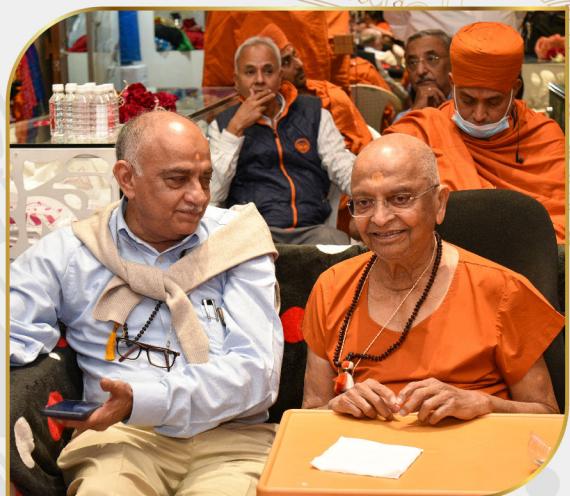


26 दिसंबर 2021

‘गुरुहरि पव्याजी स्मृति सौरभ उत्सव’ निमित्त बहनों द्वारा भाव अर्पण...



अमदाबाद में पू. विपुलभाई ठक्कर के डिजाईनर स्टूडियो पर यधरामनी...



अमदाबाद – हेतवी टॉवर्स  
य.पू. गुरुजी एवं य.पू. वशीभाई की निशा में आनंदोबहु...



हेतवी टॉवर्स में स्मृतियाँ एकत्र करते भक्त...



पू. मेहुलभाई ठक्कर के घर प.पू. दीदी की पथरामनी...



पू. शैलेषभाई शाह की 'बेकरी शॉप' पर प.पू. दीदी की पथरामनी...



## ‘गुरुहरि पप्पाजी स्मृति सौरभ’ की दिव्य स्मृतियाँ...

वर्ष 2021 की क्रिसमस व दिनांक 26 ने गुणातीत समाज के मुक्तों को दिव्य विभु गुरुहरि पप्पाजी की स्मृतियों एवं प्रगट स्वरूपों के आशीर्वाद से निहाल कर दिया।

गुरुहरि पप्पाजी के 105वें प्राकट्योत्सव हेतु प.पू. गुरुजी 24 दिसंबर को ‘पप्पाजी तीर्थ’ पर जाने वाले थे, लेकिन 22 दिसंबर को प.पू. शास्त्रीखामीजी की तबियत अत्यधिक खराब होने के कारण, प.पू. गुरुजी इसी रात को संतों व युवकों के साथ वहाँ पहुँच गये और... प.पू. शास्त्रीखामीजी ने देहत्याग कर दिया।

सो, 23 को उनकी अंत्येष्टि विधि और प्रार्थना सभा के बाद 24 की सायं सांकरदा मंदिर दर्शन करके, रात्रि को अनुपम मिशन पहुँचे। यहाँ प.पू. अश्विनभाई एक सेवक की अदा से स्वागत के लिये उपस्थित थे।

25 की सुबह ‘पप्पाजी तीर्थ’ पर सुशोभित रथ में विराजित गुरुहरि पप्पाजी की मूर्ति के पीछे, फूलों से सजी गाड़ियों में प्रत्यक्ष स्वरूपों एवं सद्गुरु संतों ने सभा मंडप में प्रवेश किया। उनका स्वागत करते हुए स्वरवृंद ने ‘आव्या तमे अहीं आज, मानो पधार्या स्वयं महाराज’ भजन प्रस्तुत किया।

सभा की शुरुआत में गुरुहरि पप्पाजी के वचनों की स्मृति करते हुए मुक्तों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम करके भक्ति अदा की।

तत्पश्चात् स्वरूपों एवं गणमान्य संतों का मंच पर उत्सव का बॅच और हार अर्पण करके सम्मान किया गया। सभा के प्रारंभ में पू. विरेनभाई ने स्मृति सौरभ गान में गुरुहरि पप्पाजी के आध्यात्मिक कार्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा—

...पप्पाजी स्थूल रूप से पंद्रह साल से नहीं हैं। पर, सारे समाज को यह कमी महसूस स नहीं होने दी। जब तक पप्पाजी देह से थे, तो सभी उनके स्वरूप में निमग्न थे। लेकिन, अब देहत्याग के बाद पूर्ण रूप से व्यापक दिखाई देते हैं। पप्पाजी जो सुख देते हैं, लाड पूरे करते थे, फिलहाल वैसा ही कार्य दिखाई दे रहा है... वे हमारे अंतर में ऐसे बैठे कि हमें अविरत सुखी कर रहे हैं... पप्पाजी का वारसा रख सकें, ऐसा हम जीवन जियें और उनका ऋण अदा करें... अनुपम मिशन के वरिष्ठ सद्गुरु प.पू. शांतिभाई साहेब ने गुरुहरि पप्पाजी की स्मृतियाँ करते हुए मार्गदर्शन दिया—

...आज हम पप्पाजी का स्मृति पर्व मना रहे हैं। इस ब्रह्मांड में एक दिव्य पुरुष



के रूप में वे पधारे और जीवों को प्रगट की उपासना समझा कर सच्चा दास बनाया। इनकी स्मृति करते हैं, तो ख्याल पड़ता है कि **वे जीव व आत्मा के साथ अपना संबंध देते थे।** जिन स्वरूप से हम जुड़े हैं, उनके प्रति रंचमात्र भी मनुष्यभाव न रहे, संपूर्ण दिव्यभाव ही रहे, तो ही हम दिव्य, निर्दोष व सबके दास बन पाएंगे और प्रभु हमारी आत्मा व रोम-रोम में अखंड बस जाएंगे। इस ज्ञान का प्रसार काकाजी-पप्पाजी ने जीवनपर्यंत किया है।

हम मानें कि **ऐसे दिव्य पुरुष प्रगट व प्रत्यक्ष हैं। ऐसे परम तत्त्व कभी विलीन नहीं होते।** यह सनातन उपासना की बात है।

श्रीजी उपदेशामृत में एक बात है—

जो हमारे भक्त को दिव्य व निर्दोष मान कर, दासभाव से उसकी सेवा करता है, वह हमें प्रिय है।

महाराज ने इसी सिद्धांत का प्रवर्तन किया है। इसी प्रकार गुणातीतानंदस्वामी, शास्त्री महाराज, योगीजी महाराज, भगतजी महाराज, जागारवामी, कृष्णजी अदा और वर्तमान समय में भी काकाजी, पप्पाजी, प्रभुखरवामी, महंतरवामी, हरिप्रसादरवामी, अक्षरविहारीरवामी, साहेबजी, गुरुजी, निर्मलरवामी, प्रेमरवामी, दिनकर अंकल, भरतभाई, वशीभाई, अश्विनभाई ने समाज में प्रवर्तया है।

आज का यह दिन पप्पाजी की स्मृतियों को हृदयस्थ करने का दिन है। हृदयस्थ यानि—**सभी भक्तों के प्रति महिमा का भाव स्वयं रख कर वे जीने की जो कला सिखा गये हैं, वह हमारे रोम-रोम में हमेशा रहे।**

तत्पश्चात् गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों के प्रतिनिधियों द्वारा गुरुहरि पप्पाजी की मूर्ति को पुष्प हार अर्पण करने के बाद, **लंदन के पू. दिलीपभाई भोजाणी** ने विडियो द्वारा अपने हृदय उद्गार व्यक्त किये—

...हम इंग्लैंड वाले खूब नसीबदार हैं कि पप्पाजी यहाँ आये, तो धीरे-धीरे उन्होंने सबके दिल में स्थान लिया। अपने सान्निध्य-सामीप्य का सुख दिया। हमें मार्गदर्शन देते हुए बताया कि भगवान मिलने के बाद हमें कैसा होना चाहिये! हमारा चरित्र और अनुशासन कैसा होना चाहिये! महामानव किस प्रकार बन सकते हैं। स्वभाव किस प्रकार विलीन करके सुख प्राप्त कर सकते हैं, उसकी सूझ दी... खुद गरजू होकर बताया कि ऐसा करोगे, तो सुख मिलेगा।

**हम पर किसी प्रकार का दबाव नहीं डाला...** पप्पाजी सोलह बार इंग्लैंड पधारे, तो उनका स्वरूप पहचानने की उमंग जगी... **जिसे जैसा पसंद था, वैसे उसके**

સાથ સંબંધ કરકે, પદ્મામની કરકે સબકો ખૂબ સુખ દિયા। મહામાનવ કા એક સમાજ અડા કર દિયા। કાકાજી, પણ્ણાજી ઔર બા ને એક અદ્ભુત સમાજ સ્થાપિત કર દિયા... પણ્ણાજી કા કાર્ય આજ ભી બહનોં, બ્રતધારી ભાડ્યાં દ્વારા જારી હી હૈ... ઇતના સમજ્ઞ મેં આ ગયા હૈ કી મહારાજ ઔર પણ્ણાજી કા માહાત્મ્ય જાનને કે સિવા ઔર કૃષ કરને જૈસા હી નહીં હૈ। બહુત શુલુઅાત મેં સાહેબ કહતે થે કી તુમ્હેં યદિ ખ્યાલ પડ જાયે કી પણ્ણાજી કૌન હૈં, તો તુમ બાવલે હો જાઓ કી ક્યા પ્રાપ્તિ હુર્ઝ હૈ। આજ સબકો પૂરા ખ્યાલ આ ગયા હૈ। ઇતને સાલ દેહ કો ગિને બિના પણ્ણાજી ને ખૂબ પરિશ્રમ કિયા હૈ... **બહુત કથા નહીં કી,** લેકિન અપને વર્તન સે ઉન્હોંને સબકો **બહુત કૃષ સિખાયા** હૈ, જો આજ ભી હમેં કામ આતા હૈ કી કિસ પ્રકાર જીવન જીના હૈ... પણ્ણાજી સે ઇતની પ્રાર્થના હૈ કી આપકા માહાત્મ્ય સમજ્ઞને મેં કહીં ચૂક ન હો જાયો। આપને જો જ્ઞાન દિયા હૈ, ઉસે સમજ્ઞને મેં કહીં નાસમજ્ઞી ન હો જાયે... વ્યાપક સ્વરૂપ મેં આપ હાજિર હી હૈં। હમ આપકે હેં ઇસાલિયે આપકે માર્ગદર્શન મેં હમેં ચલા રહે હેં, આપકા કાર્ય આપ જારી હી રખના ઔર હમ હમારી તરફ એ ઉમંગભરી ‘જી હજૂરી’ કરતે રહેં...  
 પૂ. દિલીપભાઈ ભોજાણી કે અનુભવ દર્શન કે બાદ, **પ.પૂ. નિર્મલસ્વામીજી** ને આશીર્વાદ દિયા—  
 ...હમ મૌજ મેં રહેં, તો હી ભગવાન મિલતે હેં, વર્ણ નહીં મિલતે। વર્ણ પહલે બાપા ને હમેં પણ્ણાજી, કાકાજી ઔર હાપ્રિપ્રસાદસ્વામીજી કા સમાગમ કરને કી આજ્ઞા કરી થી...  
 હમેં અબ જો કરના હૈ, વહ કરને લગ પડેં। **તુમ્હારે પાસ પવાસ લાખ કા મોબાઇલ ફોન મલે હો,** પર ઉસમેં ટાવર નહીં હોણ ઔર ફોન કવરેજ સે બાહર હોણ, તો તુમ ક્યા કર સકોગે? જબકી હમારે પાસ ગુણાતીત સ્વરૂપોં કે રૂપ મેં ટાવર ઔર કવરેજ દોનોં હેં ઔર હમેં ઉસકા ઉપયોગ કરના હૈ... હમ સબ આનંદ મેં રહતે હેં, કોર્ઝ કસની નહીં હૈ। **હમારે લિયે યે પુરષ જો કર ગયે હેં,** વો સામાન્ય બાત નહીં હૈ... ભગવાન ને પૂજન કરને કે લિયે બહુત કંકુ ઔર અક્ષત દિયા હૈ, લેકિન હમેં કાકાજી, પણ્ણાજી, સ્વામીજી, સાહેબ કા સેવન કરના હૈ।  
**પૂજન તો કફ્યોં કા હોતા હૈ,** લેકિન સેવન તો એક કા હી હોતા હૈ।

યું દેખેં કી પણ્ણાજી ને યોગીજી મહારાજ કો રાજી કરને કે લિયે કિતના પરિશ્રમ કિયા હૈ। ઉસી કા દર્શન આજ હમેં હોતા હૈ... મહારાજ કે સમય સે સાંચ્ય યોગી બહનોં હેં। ઉસી પ્રકાર વહ કાર્ય ગુણાતીત સમાજ મેં યોગીજી મહારાજ કે દ્વારા હુઆ, ઇસકા મેં સાક્ષી હું...

તત્પશ્ચાત् ગુરુહરિ પણ્ણાજી કે પ્રાકટ્યોત્સવ નિમિત્ત કેક અર્પણ કા વિશિષ્ટ કાર્યક્રમ હુઆ। મંચરથ સ્વરૂપોં એવં સંતોં કે સમક્ષ એક-એક કેક રખા ગયા, જિસકી પ્રત્યેક મોમબત્તી પર ‘**પૂ. પણ્ણાજી સ્મૃતિ સૌરભ ઉત્સવ**’ કા એક-



एक अक्षर लिखा हुआ था। सभी ने एक साथ मोमबत्तियाँ प्रज्वलित करके केक का प्रसाद वितरित किया और **गुरुहरि पप्पाजी** द्वारा निरूपित भजनों की पैन ड्राईव 'सुर सौरभ' का अनावरण करके **संतभगवंत साहेबजी** ने आशीर्दान दिया—

...गुणातीतभाव प्रगटाने का श्रेष्ठ उपाय यही है कि हमें मिले प्रगट सत्पुरुष की दिव्य रमृति का स्मरण करें। भगवान की कृपा और बड़े सत्पुरुष के आशीर्वाद से ऐसे दिव्य पुरुषों के सान्निध्य में रहने का सौभाग्य प्राप्त होता है। स्वामिनारायण भगवान अपने संग गुणातीतानंदस्वामी को लेकर आए गुरुदेव शास्त्री महाराज व योगीजी महाराज ने अक्षरपुरुषोत्तम की शुद्ध उपासना द्वारा हर एक जीव को गुणातीतभाव प्रकटाने का श्रेष्ठ व आनंददायक मार्ग बताया। बापा ने जिन्हें-जिन्हें काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी व महंतस्वामीजी से जोड़ा, उनके लिये अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना समझानी सरल हो गई। योगीजी महाराज की हम पर दृष्टि पड़ी और खूब कृपा करके शुरुआत में प्रभुदासभाई (हरिप्रसादस्वामीजी) का जोग कराया। 1957 से 1964 तक उन्होंने हमारा जतन किया। बापा को राजी करने की सूझ दी। बापा, काका और पप्पा का महात्म्य समझाया। बापा ने काकाजी से जोड़ा, काकाजी ने पप्पाजी से जोड़ा। काकाजी और पप्पाजी के प्रति विशेष सम्यक् निर्दोषभाव रहा, उसका मुख्य श्रेय हरिप्रसादस्वामीजी को जाता है... आध्यात्मिक उत्थान व समाज की प्रगति माया से सहन नहीं होती, सो वह बाधा उत्पन्न करती है। पर, माया विषम होने पर हम काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी व महंतस्वामीजी के मार्गदर्शन पर चले, तो माया हमें पराजित नहीं कर पाई। भगवान स्वामिनारायण ने वचनामृत में, गुणातीतानंदस्वामी ने स्वामी की बातों में व योगीजी महाराज ने योगीगीता व सुनृत में जो बातें करीं, उसका जीवंत दर्शन हमें गुरुजी, निर्मलस्वामी, दिनकरभाई, भरतभाई, वशीभाई, शांतिभाई, अश्विनभाई, हंसा दीदी व देवी बहन करा रहे हैं। 1966 में पप्पाजी गुणातीत ज्योत में आए पप्पाजी के लिए ऐसा सुना था कि वे काफ़ी इर्ज़व व गंभीर पुरुष हैं। परंतु उनके सान्निध्य में रह कर एहसास हुआ कि वे तो अलौकिक पुरुष हैं, सामान्य नहीं हैं। पप्पाजी बहुत प्रेमालु थे व अकल्पनीय प्रेम बरसाते थे।

एक प्रसंग याद आता है। पप्पाजी ताड़देव में विराजमान थे, तब कांदिवली में सत्संग समा थी और महंतस्वामी की आङ्गा से एक भक्त कथा-गार्ता कर रहे थे। उन्हें भगवद्गीता के श्लोक व शास्त्र की अधिक जानकारी नहीं थी। उस समा में

ગોરધનકાકા કે મામા—ફડીયા મામા મૌજૂદ થે। વે બહુત વિદ્વાન થે વ ઉન્હેં શાસ્ત્રોં કા જ્ઞાન થા। કાકાજી સે બાત કરને હેતુ ઉન્હોંને રાત કો તાડકેવ ફોન કિયા। પણ્ણાજી ને ફોન ઉઠાયા ઔર બતાયા કી કાકાજી બાપા કે સાથ હોયાં સો, પણ્ણાજી સે ઉન્હોંને કહા કી આજ શામ કો સમા મેં જિસે બાત કરને કો કહા, ઉસે ન તો ગીતા કી જાનકારી થી ઔર ન હી સંસ્કૃત વ શાસ્ત્ર કી સમજા। એસે લોગોં સે ક્યાં બાતેં કરાતે હો?

પણ્ણાજી ને તો ફડીયા મામા કો ખડકાતે હુએ કહ દિયા થા— આપ અપને આપકો ક્યા સમજાતે હો? સાલ મેં એક બાર તો સમા મેં જાતે હો ઔર જો મહંતસ્વામી કી આજ્ઞા સે નિયમિત સમા કરતે હોયાં, ઉનકે ખિલાફ બોલને વાલે તુમ કૌન હોતે હો?

પણ્ણાજી જબ પહલી બાર ઇંગ્લેંડ પથારે થે, તબ એયરપોર્ટ પર ઉન્હોંને હમેં કહા કી— બહનોં સે કંઠી ઔર કોઠારીસ્વામી સે માલા લી હૈ, શાંતિમાર્ફ સે સમર્પિત સેવકોં કા બૈચ લિયા હૈ ઔર મેરી ડ્રેસ ગૃહસ્થ કી હૈ। તો, સંતોં, સંત ભાડ્યાં, બહનોં વ ગૃહસ્થોં— ચારોં કા દર્શન મુજ્જ મેં કરો।

હમ સબકા ઉન્હોંને યું અપને મેં સમાવેશ કિયા હૈ, ઇસલિએ હમ નિહાલ હો ગયે હોયાં।

વેસે હી ગુણાતીત વિભૂતિ પણ્ણાજી ને કંઠી, માલા વ બૈચ પ્રર્દ્શન કે લિએ નહીં, બલિક ઇસલિએ ધારણ કી તાકિ ચાર પંખુડી કા સત્સંગ સમાજ એક હોકર જીવન જીએ। સહી માયને મેં પણ્ણાજી કા સ્મૃતિ સૌરમ ઉત્સવ મનાયા મી ઇસે કહા જાએ।

**કાકાજી અકસર કહતે થે—નેગેટિવ-પોઝીટિવ સરકિટ કમ્પલીટ હોગા તમી લાઇટ જલેગી।**

ઝરી પ્રકાર, સંપ, સુહૃદભાવ, એકતા વ મિલજુલ કર કાર્ય કરને કી ભાવના સે હી સરકિટ કમ્પલીટ હોગા ઔર પ્રભુ કા પ્રકાશ પ્રાપ્ત હોગા।

જીવન મેં હમને બહુત પ્રગતિ કરી હૈ। પરંતુ, યોગીરૂપ, કાકારૂપ, પણ્ણારૂપ બનને મેં હમ બહુત દૂર હોયાં। યાં દૂરી ક્યા કિ હમ મુક્તોં કો નાપતે કરતે રહતે હોયાં!

પ્રભુ કા સંબંધ દેખકર હમેં મુક્તોં કી સિર્ફ મહિમા વ ગુણગાન ગાના હૈ। મગત કેસા મી હો, ઉસે દેખકર હૃદય મેં આનંદ પ્રગટના ચાહેણા યાં ભાવ સંસ્થા, અપની માન્યતાએં, ત્યાગાશ્રમ કી ગ્રંથિયોં કો પિઘાલ દેગા। ઝન ગ્રંથિયોં કો પિઘાલ કર બ્રહ્મસ્વરૂપ-ગુણાતીતભાવ કો પાને કા સરલ માર્ગ કાકાજી, પણ્ણાજી, સ્વામીજી વ મહંતસ્વામીજી ને હમેં બતાયા હૈ।

**નિર્મળસ્વામી કે હૃદય મેં અપરંપાર મહિમા હૈ તમી હર સમય ગુણગાન હી ગાયા કરતે હોયાં। કાકાજી જિસ સર્વદેશીયતા કી બાત કરતે થે,**



पप्पाजी ने जिस चार पंखुड़ी सत्संग को एकलूप करके भवित्ति करी, इसका सच्चा दर्शन करना हो, तो दिल्ली में गुरुजी के अनिर्देश का दर्शन करो – वहाँ किसी भी सेन्टर से कोई भी भगत जाए... काकाजी-पप्पाजी को यह कराना था।

...गुणातीत ज्योत की बहनों द्वारा काकाजी-पप्पाजी का संकल्प काम कर रहा है। हंसा दीदी, देवी बेन की भेंट हमने पाई। वे खूब बड़े हैं, लेकिन तब भी हमें बड़प्पन देकर आगे रखते हैं। ऐसे अद्भुत समाज में पप्पाजी ने हमें रखा है। जो भी कसर होगी, वह वे निकाल देंगे। सो, सबकी सेवा, महिमा और गुणगान गायें। सच में काकाजी-पप्पाजी ने हमारे लिये खूब परिश्रम किया है, जिसका शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। हम पर निरंतर कृपा बरसाई, हमारा जतन किया व हमारे लिए जो परिश्रम किया, वो सच में अकल्पनीय है। बाह्यरूप से दिखाई नहीं देगा। पर, अपने संकल्प से उन्होंने हमें प्रभु की ओर गतिमान किया है। उनके संकल्प व आशीर्वाद से ऐसे मुक्तों-भक्तों का जोग प्राप्त हुआ है। परिणामस्वरूप आज सुख से भगवान् भजने का हमें अद्भुत मौका मिला है। यह हम याद रखें। संप, सुहृदभाव व एकता से सभी कार्य करें। जहाँ हो वहाँ हृदय में एक-दूसरे के प्रति भाव, रिस्पेक्ट, मान व महिमा रखते हुए करो।

स्वामिनारायण भगवान ने कहा है कि –

मेरा होकर जो जियेगा, वह भले लाख गांव दूर हो फिर भी मेरे पास ही होगा। परंतु, जो मेरे समीप रहकर भी मेरा होकर नहीं जियेगा, तो वह मुझसे लाख गांव दूर है।

**भगवान के होकर जीवन जियेंगे, तो सदैव उनके पास रहेंगे।**

एक-दूसरे के लिए प्रेम, दिव्यभाव, निर्दोषभाव, एक-दूसरे का पूरक बन कर उनके कार्य को प्रोत्साहित करने की भावना रखना एक भवित्ति है। याद रखें कि हम ब्रह्मज्योति से गुणातीत ज्योत या सोखड़ा जायें और वहाँ प्रेमस्वामी-प्रबोधस्वामी के साथ मेलजोल रखें, वह एकता नहीं है। हम जहाँ हैं वहाँ एक-दूसरे के साथ मिलजुल कर रहें—यह जल्दी है। एक बाप के चार बेटे भले बड़े महल खरीदें, पर आपस में दुश्मनी-अलगाव रखें, तो किस बाप के हृदय को शांति मिलेगी। परंतु चारों बेटे झाँपड़ी में रहते हुए भले मज़दूरी करते हों, लेकिन साथ में खाते हों और आपस में प्रेम से रहते हों, तो बाप को अंतर से खूब सुकून मिलता है।

काकाजी-पप्पाजी को हमें अंतर से राजी करना है उन्हें अंतर से राजी करने का एक ही उपाय है—जिन प्रगट स्वरूपों द्वारा वे कार्य व विचरण कर रहे हैं, ऐसे अद्भुत साधु गुरुजी, निर्मलस्वामी, प्रेमस्वामी, प्रबोधस्वामी, दिनकरभाई,



**भरतभाई, वशीभाई, शांतिभाई, अश्विनभाई, हंसा दीदी, देवी बेन, आनंदी दीदी, सर्वेश्वर दीदी—**सब निर्दोष व दिव्य हैं। उनकी सेवा अहोहोभाव से आनंदपूर्वक करें। सेवा से प्रभु को राजी करने का श्रेष्ठ उपाय प्रभु ने ही बताया है।

**शास्त्रीजी महाराज के देहत्याग के बाद योगीजी महाराज उत्तराधिकारी बने।** तब ऐसी बातें होने लगीं कि अब सत्संग समाज का क्या होगा? बापा को व्यवहार की समझ नहीं है। एक प्रमुखस्वामी के सिवाय पूरी बी.ए.पी.एस. संस्था बापा के विरोध में थी। उस समय काकाजी-पप्पाजी ने बापा को प्रभु का स्वरूप माना और संपूर्ण समाज को एहसास करा दिया कि बापा के साथ आए वे गुणातीत स्वरूप हैं।

1952 में काकाजी को ज्ञानसमाधि हुई और अक्षरपुरुषोत्तम की शुद्ध उपासना का रहस्य काकाजी ने बताया कि अक्षरधाम में जो महाराज विराजमान हैं, वे ही हमें योगीजी महाराज के लिए में मिले हैं।

जिस समय बापा को सामान्य साधु मानने में भी लोगों को आपत्ति थी, उस समय पप्पाजी ने बापा को अपनी आत्मा माना और ख्यां को उनका प्रकाश। तब से पप्पाजी बापा का साकार स्वरूप बन गए और सभी को एहसास कराया।

हरिप्रसादस्वामीजी को तो बापा ने कहा था दादुभाई-बाबुभाई का समाजम करना। योगीजी महाराज का प्राकट्य दिन पहली बार 1956 में मनाया गया। उस समय योगीजी महाराज के जीवन चरित्र की किताब प्रकाशित की। जिसे कोई चार आने में भी लेने को तैयार नहीं होता था! पर, इन दिव्य पुरुषों के परिश्रम से आज हम आनंदपूर्वक गुणातीतभाव को पाने की साधना कर रहे हैं।

सच में यह सब उनकी कृपा, आशीर्वाद, संकल्प का फल है। ऐसे दिव्य पुरुषों का ऋण हम क्या अदा करें? उनके समाज को दिव्य मानकर सम्यक् निर्दोषभाव से उसकी सेवा करें... सम्यक् निर्दोषभाव सब में रहे।

आज अक्षरधाम की सभा है। मिलजुल कर, एकत्व से भवित करने के लिये प्रभु बल, बुद्धि, प्रेरणा दें... इन दिव्य पुरुषों ने हमारे लिये जो किया है, उसका यत्किंचित् ऋण अदा करें, ऐसा हमारा जीवन बने, यही सर्व गुरुचरणों में सभी मुक्तों की ओर से प्रार्थना।

तत्पश्चात् स्मृति सौरभ आशीर्वाद देते हुए **प.पू. दिनकर अंकल** ने कहा—

...पूरी दुनिया जब क्रिसमस मना रही है, हम पप्पाजी का प्राकट्योत्सव मना रहे हैं...



1988 में पप्पाजी पहली बार अमेरिका पथारे थे। तब उन्होंने हमें सत्संग का खूब लाभ दिया।

1973 में काकाजी, साहेबजी व हर्षदभाई भट्ट के साथ अमेरिका पथारे थे, तब से वहाँ सत्संग की शुरुआत हुई।

1985 में स्वामीजी पथारे और वर्षों तक विचरण किया।

पप्पाजी नौ बार अमेरिका आये। सन 2000 में 84 वर्ष की उम्र में वे अंतिम बार अमेरिका पथारे थे। इतनी उम्र होने पर भी वे खूब जोशीले थे, तो हम भी उस मार्ग पर चले। हंसा दीदी और बहनों ने खूब परिश्रम किया है। साहेब ने कहा वैसे अंतर से हम सबको अपना मानें। अंतर की हमारी एकता होगी, तभी एकांतिकभाव संभव होगा। **काकाजी कहते थे— भगतजी महाराज, जागास्वामी और कृष्णजी अदा गुणातीतानन्दस्वामी के स्वरूप थे। परंतु, उनके बेले एकजूट नहीं हुए और भेद उत्पन्न किया। यदि हम भी इसी प्रकार खींचातानी में लगे रहेंगे, तो यही बात रिपीट होगी। हमें यह नहीं करना।** जैसे साहेब ने कहा कि हमें अपने दिल की सच्चाई से संकल्प करना है कि **ऐसी खींचातानी में नहीं पड़ना।**

गुरुहरि पप्पाजी के साथ की दिव्य स्मृति करते हुए **प.पू. गुरुजी** ने आशिष दी—

अपनी बात शुरू करने से पहले आप सभी से एक सवाल पूछना है।

क्या आप सभी ने साहेब की बात सुनी? क्या मैं दिखाई दे रहा हूँ? यदि मैं दिख रहा हूँ, तो आपने साहेब की बात सुनी ही नहीं। अगर साहेब की बात सुनी होती, तो भीतर में ऐसी एकता होती कि मेरे बदले आपको स्वयं खुद दिखाई देने चाहिये।

आज के दिन साहेब ऐसे आशीर्वाद दें कि **हमारी सारी ग्रंथियाँ स्वरूप में लयलीन होकर पिघल जायें। जहाँ कोई भेददृष्टि ही न हो। हम दिल्ली के, ये मुंबई के, ये विद्यानगर के, ये हरिधाम के, ये समाजियाला के, ये कंथारिया के, ऐसा कुछ रहे ही नहीं। हम काकाजी-पप्पाजी के सब एक।**

यह ज्ञान सिर्फ बोलने में न रहे। जब तक हमें सामने वाला व्यक्ति नज़र आता है, तब तक हम यह ज़रूर मानें कि अभी तक इस ज्ञान को हम भीतर में अपना नहीं पाये।

**जब सामने वाले व्यक्ति में हम खुद को देखेंगे, तो उसमें दोष कहाँ नज़र आयेगा? क्या हम कभी अपना दोष देखते हैं? अपना दोष देख कर उसे ढकने, पिघलाने के**

**लिये गद्गद कंठ से रोते हुए महाराज के पास हाथ जोड़ कर, उससे परे होने के लिये प्रार्थना करें तब एहसास होगा कि सब में मुझमें ऐसा सब था!** तब



## मानना कि हमने स्वरूप का सच में सेवन किया।

पप्पाजी का आज का दिन इसी हेतु है। डेकोरेशन करना, स्टेज बनाना, बड़ी संख्या में लोगों को भोजन व आनंद कराना, इन सब के लिए पप्पाजी का 'स्मृति पर्व' नहीं है। यह सब तो जगत में भी होता है। लेकिन, हमारे बौद्धिक मूल्यांकन पिघल जाएँ और जीवन में केवल एक मात्र स्वरूप ही रहें, इसे सही मायने में पप्पाजी का 'स्मृति पर्व' मनाया कहा जाए। साहेब ने बात की कि पप्पाजी ने जब यह एहसास किया कि मैं तो जोगी का प्रकाश, तब से उनके जीवन में अपने पुत्रों-रमेश व प्रफुल्ल की कोई एहमियत नहीं रही। क्या हमें किसी दिन ऐसा विचार आया है?

यूँ यदि हम स्वयं को पप्पाजी का प्रकाश मानते हैं, तो फिर सामने वाला व्यक्ति कहाँ नज़र आयेगा?

यह सब छोड़ कर पप्पाजी के सम्यक् स्वरूप को पहचानने का प्रयत्न करें। इसे पप्पाजी का सच्चा 'स्मृति पर्व' मनाया कहा जाए।

यह सारा पिष्ठपेषण पूरा करने के बाद मुझे विचार आता है कि यदि काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी जैसे गुणातीत पुरुष हमें न मिले होते, तो हम भी जगत के जीवों की तरह भेड़चाल का जीवन जी रहे होते। इसलिए पप्पाजी-काकाजी की शताब्दी के समय उनका वर्णन करते हुए राकेशभाई ने एक भजन में लिखा है—

## अपनाया नहीं होता जो आपने तो, होता हमारा क्या हाल।

इसी संदर्भ में मुझे याद आता है कि एक बार यहीं रामकृष्ण मिशन हॉल में शिविर चल रही थी। वहाँ जड़भरत और मृग का चित्र दिखा कर पप्पाजी ने मृग पर उंगली रखते हुए मुझसे कहा—

यह मुकुंद काकाजी का मृग है।

मुझे उस समय यह बात समझ नहीं आई। पर, मन में विचार उठा कि काकाजी के लिए पप्पाजी ने ऐसा क्यों कहा? काकाजी को मेरे प्रति ऐसी आसक्ति कहाँ है, जिसके कारण भरतजी को मृग का अवतार लेना पड़ा। काकाजी के लिये तो ऐसा हो ही नहीं सकता और पप्पाजी ऐसा क्यों बोले? पर, धीरे-धीरे मुझे यह समझ आया कि पप्पाजी के कहने का मर्म यह था कि— काकाजी ने बियांड लिमिट जाकर मुकुंद का जतन किया है, जिसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता।

पप्पाजी के लिए काकाजी एक बात कहते थे— मेरा भाई बहुत प्रमाणिक!



पृष्ठाजी की प्रमाणिकता की पुष्टि करता एक प्रसंग याद आता है—

काकाजी एक बार फॉरेन गए थे। मुझे पृष्ठाजी के प्रति आदर ज़रूर था, लेकिन उनसे लगाव नहीं था। तो, मैं पहले बा के पास जाता था और फिर पृष्ठाजी के पैर छूने के लिये जाता था। एक बार मैं ताड़देव में दाखिल हो रहा था कि पृष्ठाजी तारा बहन को सूचना दे रहे थे कि यह जो दिलीप है, उसे मेरे साथ ज्यादा जमता नहीं है। पर यह अपना है, सो इसका ख्याल रखना-संभालना। पृष्ठाजी की यह बात सुनकर मुझे भीतर में एहसास हुआ कि **मैं जिन्हें अपना नहीं गिनता, वे तो मुझे अपना मानते हैं।** इसलिए जो कुछ भी करसर है, वो मेरी ही है।

हम अभी इंटीमेसी-आत्मीयता की बातें करते हैं, लेकिन पृष्ठाजी को उस समय से हम सभी के प्रति आत्मीयता थी। काकाजी के स्वधाम जाने के बाद पृष्ठाजी, स्वामीजी, साहेब और सारे गुणातीत समाज ने हमें आत्मीयता की जो हूँफ दी है, प्रसंग पर हमारे साथ खड़े रहे और जहाँ ज़रूरत लगी वहाँ इन गुणातीत स्वरूपों ने आत्मीयता से हमें डॉट कर भी ग़लती करने से रोका है, उनका ऋण कभी भूलें नहीं।

अंतर में एक दृढ़ता कर लें कि आज भी ऐसे मुक्तों द्वारा काकाजी, पृष्ठाजी, स्वामीजी प्रगट हैं... प्रगट के भाव से मुक्तों में काकाजी-पृष्ठाजी को देखते रहेंगे, तो **भगवान् के भक्त में आत्मबुद्धि और प्रीति वही सत्संग है—** यह सही अर्थ में माना जाएगा।

हम सब इस राह पर चलने का प्रयत्न भी करते हैं। पर, हमारी आत्मबुद्धि व प्रीति शर्ती है और जब तक आत्मबुद्धि व प्रीति शर्ती रहेगी, तब तक वह मर्यादित रहेगी, अपने ग्रुप तक सीमित रहेगी। और... अलग-अलग ग्रुप का दर्शन कराएगी।

हमें इससे परे जाना है। केवल चेतना का संबंध देखना है। जिसे श्री अरविंद ने चैतसिक कहा। यह शब्द मैं इसलिये इस्तेमाल कर रहा हूँ कि कई पुराने मुक्तों को याद होगा कि पृष्ठाजी शुरुआत में अरविंद को फॉलो करते थे। वो ये शब्द का प्रयोग करते थे।

**जब तक चेतना हमारे स्वरूप के अनुरूप नहीं बनेगी, तब तक हम अपने ग्रुप में निमग्न रहेंगे।**

सो, सर्वदेशीय व व्यापक बनाने के लिए हम ऊपर उठें। हर एक के अंदर काकाजी और पृष्ठाजी दोनों को अलग-अलग नहीं, बल्कि एक गुणातीत विभूतियों के प्रतीक के रूप में हम दोनों को देखें, तनिक भी कम-ज्यादा का भाव इनके प्रति न रहे।

काकाजी का दर्शन करें तो मन में यह भाव रहे कि अहोहो, पृष्ठाजी के दर्शन हुए।

पृष्ठाजी का दर्शन करें, तो लगे काकाजी के दर्शन हुए। मुझे सच में हमेशा यही

માવ રહા હૈ। ઇસી માવ સે યોગી પરિવાર કે હમ સબ એક!

આજ હમારા પૂરા સમાજ હમસે યહ આશા રખતા હૈનું। એસી સર્વદેશિયતા સે વ્યાપક રૂપ સે સબ મેં પ્રભુ કા-અપને પ્રગટ પ્રભુ કા દર્શન કર્યેં... હમ અક્ષરધામ મેં તો રહતે હોય, પર આતે-જાતે રહતે હોયનું સુબહ મૂર્તિ મેં લયલીન હોકર ભજન કરતે હોય, લેકિન વહ પૂરા હોને કે બાદ વ્યક્તિ દિખાઈ દેને લગતે હોયનું। ઉસકી બજાય રાત કો સોને જાયેં તબ તક, જાગ્રત, સ્વાનું, સુષુપ્તિ મેં કેવલ-કેવલ મૂર્તિ મેં નિમન્જન રહેં—એસી કક્ષા પર હમ જલ્દ સે જલ્દ પણું જાયેં એસી પ્રાર્થના!

ગુણાતીત સમાજ કે આદ્ય સર્જક ગુલુહરિ કાકાજી, ગુલુહરિ પપ્પાજી એવં ગુલુહરિ હરિપ્રસાદરવામીજી ને અપની સ્થૂલ દેહ ત્યાગ કરને સે પૂર્વ ઉત્સવોં મેં જો આશીર્દાન દિયા, ઉસકા દર્શન કરાતી વિડિયો સે સભી કૃતાર્થ હો ગએ।

અંત મેં પંડાલ મેં બૈઠે સભી ને હમ એક હોય કી ભાવના વ્યક્ત કરતે હુએ એક-દૂજો કા હાથ પકડા ઔર તબ સ્વરંગ ને ‘ચાલો ભક્તો એક સંગાથે હાથમાં હાથ જ્ઞાલી લઈ, અક્ષરધામ ખુલી ગયા છે...’ ભજન પ્રસ્તુત કિયા। ઇસી દૌરાન એક-દૂજો સે જુડે હારોં કો મંચરથ સ્વરૂપોં-સંતોં કો એક સાથ પહનાયા ગયા। યે દોનોં દૃશ્ય અત્યંત આત્મસ્પર્શી થે। ઇસી કે સાથ સંતોં-યુવકોં કી સભા કા સમાપન હુઆ।

ગુલુહરિ યોગીબાપા કે વચન સે બહનોં કો ભગવાન ભજવાને કા માર્ગ પ્રશસ્ત કરાને કે લિયે, ગુલુહરિ કાકાજી એવં ગુલુહરિ પપ્પાજી ને તત્કાલ રૂઢિગત સમાજ કા વિરોધ કલ્પના સે પરે કા સહા। સો, દિવ્ય વિભૂતિ ગુલુહરિ પપ્પાજી કે 105વેં પ્રાકટ્રય પર્વ પર ભવિત અદા કરને હેતુ 26 દિસંબર કી સુબહ બહનોં કે સાનિધ્ય મેં સભા કા આયોજન થા। ગુલુહરિ પપ્પાજી કી જીવનભાવના—‘પ્રથમ પ્રભુ પછી પગલું’ કો દશતિ હુએ પુષ્પોં સે ‘P’ અંકિત વાહનોં મેં વિરાજમાન બહનોં ને સભા મંડપ મેં પ્રવેશ કિયા। તત્પશ્ચાત્ સ્વાગત વૃત્ય કરતે હુએ ‘બ્રહ્મસમાજના ઘડવૈયા’ લિખિત પાલકી મેં વિરાજમાન ગુલુહરિ પપ્પાજી કી મૂર્તિ કો મંચ પર સ્થાપિત કિયા ગયા। સભા કે પ્રારંભ મેં ‘આપ્યો રે ઝડો જોગ...’ ગરબા પ્રસ્તુત કરકે બહનોં ને ભવિત અદા કી। તત્પશ્ચાત્ મંડપ મેં ઉપસ્થિત મુક્તોં ને યથાસ્થાન પર ખાડે હોકર, દો હાથ જોડું કર ‘ગુલુહરિ પપ્પાજી આપ પ્રગટ છો, સ્વરૂપોના સાનિધ્યમાં પ્રત્યક્ષ છો...’ સ્તુતિ વંદના કી। સભા કા પ્રારંભ એક પ્રશ્નોત્તરી કે રૂપ મેં ગુલુહરિ પપ્પાજી કે આશીર્વાદ સે હુઆ। મંચરથ સ્વરૂપ બહનોં કો ઉત્સવ કા બંચ વ હાર અર્પણ હોને કે બાદ સર્વપ્રથમ ગુણાતીત જ્યોત કી વરિષ્ઠ પૂ. હંસા બહન ગુણાતીત ને ગુણાતીત સમાજ કે સભી કેન્દ્રોં મેં ભગવાન ભજતી બહનોં કા ગુણગાન કરતે હુએ ‘સ્મૃતિ સૌરભ પ્રાર્થના’ કી—



...पप्याजी के दर्शन मात्र से अंतर में दृढ़ता हो गई कि ये ही मेरे कल्याण व मोक्ष के दाता हैं और मुझे जीवन का समर्पण करना नहीं पड़ा, स्वाभाविक रीति से हो गया... उन्हें सिर्फ हमारी आत्मा दिखाई देती है और काकाजी, पप्याजी और बा के संकल्प से, उनके लहू की बूंद के बलिदान से ब्रह्मसमाज स्थापित हुआ है... ज्योत में सभी बहनों को पप्याजी ने उनकी रीति से सेवा देकर 'परम भागवत संत' बनाया। नारी को नारायणी बनाने का कार्य काकाजी-पप्याजी ने इस प्रकार सुगम-सुलभ कर दिया... पप्याजी द्वारा दिया एक वाक्य ब्रह्मसूत्र बन जाता है। भविष्य में लोग उस पर रीसर्च करेंगे, तो भी वे समझ नहीं पायेंगे। ऐसे पप्याजी हमें सहज मौज व मुफ्त में मिल गये, आत्मा में विराजमान हो गये। भगवान के रूप में स्वीकार हो गये और अपने अनुरूप उन्होंने हमारा तंत्र बना दिया। उन्होंने पृथ्वी पर जो सर्जन किया, उसका यहाँ विराजमान स्वरूपों द्वारा दर्शन हो रहा है... ऐसा जोग कहाँ मिलने वाला है? बस यह मौका लूट लें और सही अर्थ में 'सच्चा साधु' बनें। किसी भी भूमिका में अटके नहीं हो पप्याजी, केवल एक आपका होकर रहें...

सभी केन्द्रों की प्रतिनिधि बहनों द्वारा गुरुहरि पप्याजी को हार अर्पण करने के उपरांत पू. डॉ. नीलम बहन ने अनुभव दर्शन कराया—

...श्रीजी महाराज का संकल्प आत्मसात करने के लिये हमारा कलेवर मन, बुद्धि, वित्त अंहकार के रहित होना चाहिये। **अनादि अक्षरब्रह्म गुणातीत प्रगटे**, तो उनके वारिसदारों ने हमारा हाथ थामा। काकाजी, पप्याजी, सोनाबा संरक्षक बने... हमें ब्रह्मरूप करने की जिम्मेदारी ली। बहनों को ब्रत देकर, उनके लिये काकाजी-पप्याजी ने नियम बनाये... अपने संकल्प और प्रेम से उन्होंने हमें बांधा। फलस्वरूप भीतर में अनुशासन प्रकटा कि पप्याजी को जो नहीं परसंद है, वो मैं नहीं करूँगी। मेरे गुरु को जो परसंद नहीं है, वो मैं नहीं करूँगी...

गुरुजी ने बहुत अच्छी बात की कि मैं तुम्हें दिखाई देता हूँ? उनका कहना था कि सामने वाले में भी खुद को देखना चाहिये। यूँ सब में पप्याजी ही दिखाई देने चाहिये... पप्याजी कहते थे ज्ञान नहीं, नीरवता होनी चाहिये। पप्याजी जैसे पुरुष का स्मरण और उनके कार्य की शक्ति का दर्शन करते हैं, तो ब्रह्मानंद की मस्ती आती है... हम सभी के हृदय में हमारे सत्युरुष ने संकल्प करके स्थान लिया ही है। उनका संकल्प एक ही है कि तुम गुणातीत साधु बनो... इतने वर्षों तक

पप्याजी ने अपने सान्निध्य से कई स्थानों और जीवों को तीर्थत्व प्रदान किया है। उसकी विस्मृति न हो, स्मृति रहे और आनंद की सौरभ बनने योग्य मेरा तंत्र बने...

**मूलें नहीं कि मैं आपका प्रकाश हूँ।** इन पुरुषों ने बहुत कुछ दिया है। उनकी

निर्मल, निर्दोष नज़र और उनके रिमत का ध्यान करें, तो अंतर प्रफुल्लित हो जाता है। उसी सुख से हम संकल्प, भाव और क्रिया करें ...

**तत्पश्चात् प.पू. सर्वेश्वर बहन** ने प्रार्थना करते हुए कहा—

आज अद्भुत लाभ प्राप्त करने हम सब एकत्र हुए हैं। आज के मंगल पर्व पर प्रार्थना करने का मौका मिला है, तब स्मृतियाँ हो रही हैं।

**पहली**— पप्पाजी ने स्वामीजी की 63वीं जन्मजयंती लंडन में मनाई थी। उस दिन **पप्पाजी** ने स्वामीजी का जीवन दर्शन करते हुए कहा—

हरिप्रसादस्वामीजी कल्याण यात्रा के लिए लंडन की धरती पर पथारे हैं। भगवान् स्वामिनारायण जिस गुणातीत परंपरा को धरती पर ले आए, हम सब उसी कल्याण परंपरा में बैठे हैं... भारत में लाखों भक्तों व कार्य को छोड़ कर स्वामीजी यहाँ विराजमान हैं।

पप्पाजी का वचन पूरा होने से पहले **स्वामीजी** बोल उठे—

पप्पाजी, यहाँ कोई कार्य कैसे याद आएगा? जब सत्युरुष के समक्ष बैठने का सौभाग्य प्राप्त हो, तब सम्पूर्ण भार सत्युरुष को सौंप देना होता है। उनके समक्ष तो केवल हाथ जोड़कर बैठना होता है।

**दूसरी स्मृति**— पप्पाजी का 82वां प्रागट्य पर्व मनाया जा रहा था, तब **स्वामीजी** ने हम सब साधकों को सूचन करते हुए कहा था—

आज सबसे विशेष बात यह है कि हम सब जीवंत परंपरा में बैठे हैं। पप्पाजी की 82 वर्ष की उम्र और उनके स्वरथ व निरामय देह का दर्शन हम सभी साधकों के लिए सौभाग्य की बात है। यह दर्शन साधकों के लिए परम कृपा है।

गुणातीत परंपरा को समझाते हुए **स्वामीजी** हमेशा कहते थे— भगवान् स्वामिनारायण ने भारत की धरती पर जीवंत प्रणालिका को स्थापित करके हम सबको सनाथ किया है। खूब अहोभाव से भगवान् के साथ रहते हुए भगवान् भजते हैं। पृथ्वी पर कलियुग में इससे बढ़ कर कोई नसीब हो ही नहीं सकता। **ऐसे सत्युरुष की नज़र में हम आ गये।**

भगवान् स्वामिनारायण ने **बोले श्रीहरि रे** में स्वयं यह लिखा— मेरा लोक, भोग व मुक्त सब दिव्य हैं।

इन पंक्तियाँ को समझाते हुए **स्वामीजी** बोले— जो मेरे साथ जुड़े हुए हैं, उनका सब कुछ दिव्य है।

मन, बुद्धि, वित्त और अहम् के पार जाकर हमें यह बात स्थिर करनी है। यह



मानना सरल नहीं है। परंतु, मुक्तों की महिमा का गान व हमें मिले प्रगट प्रभु के अथक् परिश्रम की ओर निरंतर नज़र रखनी है। मुझे अक्षरधाम का अधिकारी बनाने के लिए उन्होंने यह मनुष्य देह धारण किया है...

महाराज ने हमारे लिये जब जीवंत परंपरा स्थापित की, तब एक ही संकल्प करें- आशीर्वद मांगे कि हमें जो मिले हैं, हम उन्हें समझें, उनकी शोभा बढ़ायें और स्वयं को सेवा-भक्ति में याहोम कर दें। काकाजी 66 से 68 के दौरान जब सोख़डा आते, तब कहते थे— बालक बनना है, भगवान का ही बल लेकर जीना है। स्वामीजी कहते कि ये सूत्र बहुत अनिवार्य है। भगवान हमारा सब कुछ कर देंगे। आज के दिन स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना है कि आप जो भी संकल्प करें या आशीर्वद दें, वो हम आत्मसात करने तत्पर बनें... हमारी जाग्रतता प्रतिदिन बढ़ती रहे।

गुरुहरि पप्पाजी की कृपापात्र लंदन की पू. अरुणा बहन भोजाणी ने विडियो द्वारा स्मृति लाभ दिया—

...पप्पाजी के मिलने से हम खूब धन्य और नसीबदार बन गये... विदेश की धरती पर पप्पाजी ने बहनों को भेजा। इनके समागम से सेवा और स्वभजन करने की तालीम मिली... धीरे-धीरे पप्पाजी के स्वरूप की पहचान होने लगी। हम जगत के मूल्यांकन से जीते थे, लेकिन सत्संग करते हुए ख्याल पड़ा कि यहाँ मूल्यांकन ही अलग हैं। किसी का दोष, स्वभाव, प्रकृति, त्रुटि देखना नहीं, संबंध वाले की सेवा करनी और उसमें प्रभु को देखना है... **सद्गुरुओं ने महिमा गाई**, तो ख्याल आया कि पप्पाजी भगवान का स्वरूप हैं, पप्पाजी का जीवन और वर्तन देखा तो अनुभव किया कि गुणातीत स्वरूप ऐसे होते हैं।

तदोपरांत प्रथम सभा की भाँति ही मंचस्थ स्वरूप बहनों के समक्ष केक का प्रसाद अर्पण किया गया। जिनकी मोमबत्तियों पर अंग्रेजी में **PAPPAJI 105** लिखा था। केक के प्रसाद के बाद प.पू. आनंदी दीदी ने आशीष याचना करते हुए कहा—

...आज करीब डेढ़-दो साल के बाद, मानो पप्पाजी ने ही हम सबको एक साथ इकट्ठे कर दिये हैं। आज पप्पाजी का 105वाँ प्रागट्य दिन मना रहे हैं, तो सभी स्वरूपों के चरणों में एक प्रार्थना करनी है कि अभी जो ओमिक्रोन-कोरोना का बोल रहे हैं, उसमें अपने सभी हरिभक्तों

की खूब रक्षा हो और दिल्ली में गुरुजी का 85वाँ बर्थडे 'साधु-पर्व' हम सब इकट्ठे होकर मना सकें। हमारी अक्षर और पुरुषोत्तम की युगल उपासना है। गुरुजी अक्सर बात करते हैं कि महाराज ने स्वयं कहा कि गुणातीतानंदस्वामी को नहीं

लाए होते तो वे अधूरे रहते और गुणातीतानंदस्वामी ने तो ऐसा कहा कि श्रीजी महाराज के बिना मेरा कोई अस्तित्व ही नहीं है। मुझे हमेशा ऐसा रहता है कि काकाजी और पप्पाजी एक दूसरे में समाए हुए हैं। जैसे सबके बताया कि एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। सालों पहले काकाजी अक्सर अपनी बातों में कहते—

**‘अमारी एकता ने तमे नहीं समझी शको, अमारा तो मझियारा हैया’।**

उस समय तो ये बात समझ नहीं आती थी। दोनों की जीवनशैली खूब अलग दिखाई पड़ती थी। पर, धीरे-धीरे ख्याल पड़ा कि उनकी आंतरिक एकता खूब जबरदस्त थी। मैंने एक प्रसंग सुना था—

काकाजी ताड़देव में जलेबी खा रहे थे और तभी पप्पाजी से जुड़े एक मुक्त आए।

काकाजी बोले— ‘पप्पाजी पण जलेबी जमे छे, तमे पूछी जुओ...’

पता लगाया तो सच में पप्पाजी भी उस समय विद्यानगर में फाफड़ा-जलेबी का नाश्ता कर रहे थे।

बापा तो इन दोनों भाइयों को अपना कार्य कराने के लिए ही धरती पर लाये थे। संतों-युवकों, गृहस्थ मुक्तों का समाज तैयार किया। लेकिन, ये बहनों को एकांतिक धर्म सिद्ध कराने का कार्य अशक्य था। काकाजी के प्रवचन में ही कल था कि बापा ने कहा था— एमा ठाल पड़ी जशे।

लेकिन, ऐसे अशक्य कार्य को शक्य करके उन्होंने दिखाया। आज काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी और अक्षरविहारीस्वामीजी स्थूल रूप से अपने बीच नहीं हैं। पर, हरेक का दिल कहेगा कि वे संतभगवंत साहेबजी, गुरुजी, दिनकरभाई, भरतभाई-वशीभाई और इन बड़ी बहनों के लप में हमारे बीच प्रगट ही हैं।

ज्योति बहन, तारा बहन, दीदी, देवी बहन, प्रेम दीदी, योगिनी बहन, सर्वेश्वर दीदी अगर नींव में न समाए होते, तो आज हम सबका इस रास्ते चलना एक कल्पना ही होती। खूब कृपा करके इन सबने हम सबको इस रास्ते अग्रसर कर दिया। जगत की हाय-तोबा की सब बातें जब सुनते हैं, तब ख्याल आता है कि ओहो इन लोगों ने सच में हम पर कैसी कृपा करी है। महाराज के समय का एक प्रसंग हम सबको पता है—

**‘महाराज ने संतों से पूछा कि तुम्हें संकल्प परेशान करते हैं? जिन्हें इस चीज़ का ख्याल ही नहीं था, उन्होंने कहा— नहीं, महाराज जब से आप मिले हैं, तब से कोई संकल्प उठता ही नहीं हैं। लेकिन सबसे बड़े मुक्तानंदस्वामी ने कहा— महाराज विचारों का तो ऐसा है कि एक थैली में सरसों के दाने**



મરે હોં ઔર નીચે એક છોટા-સા છેદ કર દિયા હો, તો સારે દાને આપને આપ ફિસલતે હુએ નિકલ જાતે હોં’

ગુરુજી તો કહતે હોં કિ જડ વર્સ્તુ યા યે ગુણાતીત સ્વરૂપ કો સંકલ્પ નહીં ઉઠેંગે, બાકી હમેં તો ઉઠેંગે હીં। મેરી સ્ટડી ટેબલ એક બહુત પુરાના કલેણ્ડર હૈ। ઉસ પર પણ્ણાજી કી બહુત અચ્છી મૂર્તિયાં ઔર ઉનકે સૂત્ર મી લિખે હુએ હોં। સુબહ ટેબલ પર જબ બૈઠતી હું, તો કામ કરને સે પહ્લે કલેણ્ડર કી ડેટ ચેફ્ન્ઝ કરતી હું। એક દિન મેરા માઇંડ થોડ્સ સે પરેશાન હો રહા થા, રોજ કી તરહ મૈને કલેણ્ડર કા પન્ના પલ્ટા। શાયદ 16 તારીખ કા પન્ના થા ઔર ઉસ પર લિખા થા—  
**‘દરેક પ્રસંગે શ્રીજી ને ઉપાયભૂત કરવા, એજ છે સર્વોપરિનો આસરો’**

વહ પઢ કર મેરા માઇંડ એકદમ શાંત હો ગયા કિ સ્વરૂપોં ને હમેં કિતની ચાબિયાં દી હોંનોં પ્રસંગોં પર પણ્ણાજી કા કહા હુઅા સિર્ફ એક સેન્ટેન્સ યાદ કરેં કિ  
**‘આઇ એમ પેંઝા ધી કોર્ટ ઓફ માય કલ્યાણ’**

એક દિન સૂત્ર આયા—

**‘ગુણાતીતના અલ્પ સંબંધવાળાને નિર્દોષ માનીને વર્તાએ, તો નિર્દોષ થર્ફ જવાયા’**

જબ પ્રસંગ બનતે હોં, તબ કોર્ઝ જ્ઞાન યાદ નહીં આતા, સાધુ કા લાઇ-પ્યાર યાદ નહીં આતા, પ્રસાદી કી દી હુર્ફ ઝની ચીજે કામ નહીં આતીં। લેકિન એસે છોટે-છોટે સૂત્ર કામ કર જાતે હોં। જેસે કાકાજી કહતે થે—

**માનસિક ગણત્રિયોં મુકી દેશો, તો ચૈતન્ય ભૂમિકા ઓટોમેટિક શરૂ થર્ફ જશો।**

સ્વરૂપોં ને હમેં ભરપૂર દિયા હૈ ઔર કોરોના કાલ મં તો બહુત જ્યાદા। અબ સિર્ફ હમારે વર્તને કી કસર રહ ગર્ફ હૈ। એસા મુઝ્ઝે મેરે લિયે લગતા હૈ। શુલાત મં હમને સ્વામીજી, સંતમગવંત સાહેબજી ઔર ઇન બહનોં કે દર્શન નહીં કિએ થે, લેકિન કાકાજી જબ મી દિલ્લી આતે તો હમેશા ઇનકી બહુત મહિમા ગાતો। એસે હી પણ્ણાજી ને મી હમારે મીતર ખૂબ મહિમા મરી હૈ। મુઝ્ઝે યાદ આતા હૈ— 1996 મં યહાઁ ભવિત ઉત્સવ મં દિલ્લી સે હમ 100-125 જને આએ થે। રાકેશમાર્ફ જો હમારે યહાઁ હિન્દી મજન બનાતે હોં, ઉન્હોને તબ પણ્ણાજી કે લિયે એક મજન બનાયા થા—

**‘ભવિત ઉત્સવ આજ મનાએ, શાશ્વત યે પલ કર લોં’**

ગુરુજી ને મજન મં સ્વર્ય એક-એક શબ્દ કા ચેફ્ન્ઝ કરાયા। ઔર તો ઔર, કર્ફ બાર ખુદ ગાકર બતાયા કિ એસે નહીં એસે ગાઓ। ઉસ મજન મં હી થા—

**‘અખંડ ધરા પર પ્રગટ રહુંગા, ભારત પર આશીષ બરસાએ શ્યામ।  
 ધન્યવાદ, ધન્યવાદ, ધન્યવાદ...’**

उसमें गुरुजी ने ऐसा लिखवाया—

**पप्पाजी के रूप बिराजे, पहचानो हैं श्रीजी यहां, श्रीजी यहां, श्रीजी यहां...**

एक लाइन ऐसी लिखवाई—

**अमर गुणातीतभाव बहनों में प्रगटाया वो श्रीजी यहां, श्रीजी यहां, श्रीजी यहां...’**

भक्ति उत्सव में जब वह गाया, तो सबको खूब पसंद आया।

फंक्शन की पूर्णाङ्गति के बाद हमें अमदावाद जाने के लिए निकलना था। हम सब प्रभुकृपा में पप्पाजी के दर्शन करने गये। अभी जहाँ पप्पाजी की मूर्ति रखी है वहां पहले डाइनिंग टेबल रखा रहता था। वहीं कोने में सोफे पर पप्पाजी बैठे थे। हम सब दर्शन करके पप्पाजी के आस-पास बैठे गए। तब इस भजन की बात निकली, तो पप्पाजी ने राकेशभाई को वह दोबारा गाने के लिये कहा। जैसे ही यह लाइन आई—

श्रीजी कहां? तो **पप्पाजी** ने रोक कर पूछा—

**तमारा माटे श्रीजी क्यां?**

हम सब तो पप्पाजी की तरफ निहार ही रहे थे। पर, पप्पाजी ने तुरंत कहा—

**तमारा माटे श्रीजी गुरुजीमां छे।**

ऐसा वे तीन बार बोले। दोबारा फिर पूछा कि तमारा माटे श्रीजी क्यां?

वो जगह, पप्पाजी के जेस्चर की सारी स्मृति अभी भी मुझे एकदम याद है। मैं रोज़ पूजा में याद करती हूँ। आज प्रार्थना करने का दिन है। ये सब स्वरूप हमें देने ही बैठे हैं। जैसे कल गुरुजी बोले न कि अब 85 तो हुए, कब पहुँचेंगे? काकाजी कहते—समागम से! हम समागम का अर्थ यही समझते थे कि संत के पास बैठे कर कथा-वार्ता सुनना। लेकिन काकाजी ने एक बार बताया था कि समा नी गम पड़ी जाए (समय की नज़ाकत समझें)—यह है समागम! अब समय जरा भी वेरट करने जैसा नहीं है। भजन की एक लाइन है—

**‘तारी एक-एक पळ जाए लाखनी...’**

आज स्वरूपों के चरणों में यही प्रार्थना करनी है कि अब निर्दोषबुद्धि और सुहृदभाव की लिप्त में आप हमें बिठा दो। अभी अक्षूबर में दिल्ली में तीन युवकों को साधु की दीक्षा दी थी। संतभगवंत साहेबजी तब पथारे थे। भागवती दीक्षा लेने के बाद तीनों संत साहेबजी के सामने बैठे थे। तब साहेबजी ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए कहा—

**हमसे चाहे कुछ और हो पाए या न हो पाए, पर कभी भी गुरुजी को किसी चीज़ के लिए ‘ना’ नहीं करना। हमेशा ‘हाँ जी’ करना,** फिर



दोबारा उन्होंने पूछा भी— क्या करना?

फिर खुद बोले— ‘हाँ जी’ करना।

तत्पश्चात् प.पू. देवी बहन ने आशीर्दान दिया—

...हमें अंदर से संप, सुहृदभाव और एकता से जीना है... अंदर के माहात्म्य से हम यहाँ सब एकत्र हुए हैं।

ये अद्वितीय की सभा है कि जहाँ मेरा-तेरा, पक्षपात कुछ भी नहीं। बस, आनंद-आनंद-आनंद... महिमा व माहात्म्य से बहनें उठाव लेती हैं। पप्पाजी-काकाजी को यही चाहिये था... हमारे खलूपों को जो पसंद है, उस लंबि में हम जुड़ जायें और संप, सुहृदभाव, एकता रख कर ब्रह्मानंद करते रहें... उनके सिद्धांत से किसी के अभाव-अवगुण में हमें पड़ना नहीं और स्वामी-स्वामी करना है...

प.पू. हंसा दीदी ने आशीष वर्षा करते हुए कहा—

...अभी भजन गाया— श्रीजी यहां, श्रीजी यहां... जब सभी श्रीजी हैं, तो उपदेश किसे देना है? सिर्फ दर्शन करना होता है। महाराज और शास्त्रीजी महाराज ने अनंत रीति से दर्शन दिये हैं। काकाजी ने अपने बिज्ञनेस के लिए 51 हजार रुपये एकत्र किये थे। परंतु, शास्त्रीजी महाराज ने गढ़ा मंदिर के निर्माण के लिए वे मांग लिये। काकाजी की सेवा से प्रसन्न होकर, योगीजी महाराज ने सन् 1952 में उन्हें साक्षात्कार करा के अपने खलूप की पहचान करा कर, प्रसन्नता का पुरस्कार दिया। हमें तो वह पुरस्कार बिलकुल मुफ्त मिला है। उस समय की परिस्थिति अप्रीका-मोर्बासा में पप्पाजी महाराज ने सुनी। पप्पाजी भारत पद्धारे। दोनों भाइयों ने बापा के संकल्प से गुणातीत समाज की रचना की।

काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, अद्वितीयविहारीस्वामीजी, साहेबजी, गुरुजी, बा, बेन सब खतंत्र रूप से अपना कार्य कर सकें, इस हेतु बापा ने विभाजन कर दिया। फलस्वरूप आज हम यह सब कर पाए हैं। देवी बहन ने अपने आशीर्वचन में कहा कि भगवान् के भक्त को माथे का मुकुट मारें। यह सुन कर मुझे विचार आया कि सिर पर जब मुकुट पहनते हैं, तो भार महसूस होता है। सो, जब सभी भक्त मेरे माथे के मुकुट होंगे, तो मुझे उनका कितना भार महसूस होगा? बस उस भार के कारण हम प्रभु को न भूल जायें, देवी बहन आप ऐसी कृपा करना...

जब योगीजी महाराज अंतर्धान हुए, तब ‘अनुपम’ में काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी,

अक्षरविहारीस्वामीजी, साहेबजी, हरिभाई साहेब एकत्र हुए और सब ने तय किया कि हम सभी को एक-दूसरे का स्वीकारना है। इसलिये **ज्योत, पवर्ष, हरिधाम, सांकरदा, अनुपम मिशन**—सबको एक होकर करना है। सबको एक-दूजे को मान्य करना है...

अब साहेबजी के हाथ में सारे समाज की डोर है... अपने आश्रितों की वो उपास्य मूर्ति हैं, तो हमारे पूजनीय हैं। सो, उनके लिये सतत प्रार्थना करनी हैं। गुरुजी के लिये प्रार्थना करनी है। हम सब प्रार्थना करें कि साहेबजी व गुरुजी स्वस्थ रहें। ये दोनों स्वस्थ रहेंगे, तो अपने संकल्प से वे हमें बल प्रदान करेंगे।

इस उत्सव के लिए जब सारी योजना कर रहे थे, तब मैंने यही कहा—आनंद करते हुए भी हमें यह भूलना नहीं चाहिये कि हमारा कर्तव्य क्या है? चौबीस घंटे हमें मनन होना चाहिए कि हमें एकांतिक बनाने के लिये काकाजी-पप्पाजी, बा-बेन या जिस भी स्वरूप ने ग्रहण किया, उनका परिश्रम सार्थक करना है। इस देह का कोई भरोसा नहीं है। जब तब देह अच्छा है, सिंसियर रहना है। ओनली वन थिंग रिक्वार्ड- सिंसियारीटी।

हमें अपने भगवान् व गुरु के प्रति वफादार रहना है। वह वफादारी क्या कि जब हमने साधक का व्रत लिया, तब हाथ जोड़कर यह स्वीकारते हुए कहा था—आप जो कहोगे, वैसा ही हम करेंगे। आपका वचन, मेरा जीवन।

श्रीजी महाराज ने स्वयं कहा है कि मेरा वचन ही मेरा स्वरूप है। सो, हमने जो वफादारी का वचन दिया है, उसका पालन करना है। यह करते हुए जो भी बाधाएँ आयें, उसे धकेलने की ताकत भजन और माहात्म्य युक्त सेवा से मिलती है। धुन-भजन व प्रार्थना करते हुए सिंसियर रहेंगे, तो बल अवश्य ही प्राप्त होगा।

सन् 1956 की बात है। पप्पाजी ऑफिस जा रहे थे और मुझे घर जाना था। तो, स्टेशन तक छोड़ने के लिये पप्पाजी ने मुझे अपने साथ टेकसी में बिठा लिया। तीन-चार मिनिट का रास्ता था। उस दौरान मैंने पप्पाजी से कहा कि मुझे भगवान् भजने हैं। तो, पप्पाजी ने इस विषय पर बहुत सारी बातें बताईं कि साधना मार्ग में ऐसा होता है—वैसा होता है। जब स्टेशन आया, तो मैंने पप्पाजी से कहा—बाबुभाई आपने जो-जो समझाया, मैं वो सब करूँगी पर आपके बल, आधार व आश्रय से। पप्पाजी टेकसी से उतरे और मुझे कौल दिया—मेरे बल, आधार व आश्रय से मैं कराऊँगा। फिर प्रसंग खड़े हुए, साधना शुरू हुई। हठ, मान, ईर्ष्या आकर खड़े हो गये। मुझे तो ऐसा ही था कि मुझ में कुछ है ही



नहीं पर, जब सब बाहर निकलने लगे, तब मुझे ऐसा होता था कि बाबुभाई बल क्यों नहीं देते? एक दिन मैंने बाबुभाई से कहा कि आप मुझे बल नहीं देते, इसलिये ये सब हो जाता है। पप्पा जी ने मुझसे कहा—तूने मुझसे कभी भी बल माँगा? तूने बल माँगा हो और न मिला हो, तो मुझे बता। फिर मैंने विचार किया कि सच में बल नहीं माँगती। हाँ, इसने ऐसा किया—वैसा किया। इसे ऐसा नहीं करना चाहिये था। इसके कारण ऐसा हुआ, मेरा अपमान हो गया। मुझे बहुत दुःख लगा वगैरह-वगैरह... इन सबने ऐसा किया।

**एक बात का ध्यान रखना। जिसे जो सेवा सौंपी गई हो, उसे मान्य करना सीखना चाहिये।**

कल साहेब ने अच्छी बात की, गुरुजी ने चैतसिक की बात करी और दिनकरभाई खास शिकायों से पथारे। लेकिन खूब आनंद हुआ। मेरे लिये पप्पा, उसके काका और गुरुजी, ऐसा नहीं। तुम्हारे चैतन्य के लिये जिस रूप की ज़रूरत है, वहाँ तुम्हें रखा है... पप्पा जी को जो संप, सुहृदभाव, एकता रखवानी है, वो रखवानी न पड़े बल्कि अंतर से हो जाये। यह तो स्वामिनारायण का परिवार है, उसमें भी योगी का परिवार है। उसमें गुणातीत समाज में काका, पप्पा और बा का परिवार बैठा है। उसमें स्वामी, साहेब, गुरुजी उनके बेटे और बहनें लड़कियाँ हैं। हम एक समाज के हैं, एक ध्येय है। तो, हमें क्या करना है? मेरे अंतर का सुख किसी भी संजोग में जाये नहीं, ऐसी प्राप्ति करनी है। हमारे सत्पुरुष समर्थ हैं। उनसे क्या आशीर्वाद मांगने? वे अपने आप देंगे। हम इनके हैं। माँ-बाप तो अपने बालकों को ही देते हैं। हम उनके हैं, तो वे हमें देंगे ही। हमें सत्पुरुष के वचन को अपना जीवन बनाना है। यह हमारा कर्तव्य, साधना और जीवन है... हमें कहीं न कहीं तो अपना 'स्व' छोड़ना ही पड़ता है। तभी तो पप्पा जी ने कहा— गरजू बन कर सेवा करो और दिव्यभाव रख कर सहन करो। यदि ऐसा हम करते रहते, तो आनंद महसूस होता। ब्रह्म का गुण आनंद है। इनका वचन हमारा जीवन बने... कोई भी एक वचन लेकर हमारे जीवन को सही अर्थ में हमारे स्वरूप के प्रति समर्पित हो जायें... अब हमारा मन टोटल उन्हें सौंप दें। हमारा मन उनकी प्रसन्नता के सिवा और कुछ अपेक्षा ही न रखे, ऐसे हम बन जायें—हे

महाराज, ऐसी कृपा करना।

उत्सव के समापन में गुणातीत ज्योत की डॉक्टर्स बहनों ने मंचस्थ स्वरूप बहनों को हार अर्पण करके अपना भाव प्रकट किया। प.पू. हंसा दीदी ने वर्ष 2022 के

केलेन्डर और प.पू. देवी बहन ने गुरुहरि पप्पाजी की छाया आकृति वाली घड़ी का अनावरण किया। इस घड़ी की विशेषता यह है कि समय के अंतराल पर गुरुहरि पप्पाजी की आवाज़ में जय स्वामिनारायण, भजन की पंक्ति और जीवनमंत्र सुनाई देता है। बहनों ने मंचस्थ स्वरूप बहनों को शॉल ओढ़ा कर सम्मानित किया और गुरुहरि पप्पाजी द्वारा निरुपित भजनों की पॅनड्राईव की स्मृति भेंट दी। हरिधाम-भक्तिआश्रम की बहनों ने भी मंचस्थ स्वरूप बहनों को स्मृति प्रार्थना अर्पण की। विडियो द्वारा गुरुहरि पप्पाजी का आशीर्वाद प्राप्त किया। नवीनता से उत्सव का समापन करने हेतु, गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों के प्रतीक चिन्हों को फूलों की लड़ियों द्वारा एक-दूजे से जोड़ कर बहनें उपस्थित हुईं, तब सुरंगृद ने प्रार्थना गाई—  
संप, सुहृदभाव, निर्दोषबुद्धि राखी राजी करीये...

एकता राखी, माहात्म्य समझी, सेवा तारी रीते करीये...

तब संकल्प अम जीवन बने, एवुं करी दे नाथ...

और... स्वरूपों के निरामय स्वास्थ्य की प्रार्थना-धुन से उत्सव का विसर्जन हुआ।

26 दिसंबर को बहनों की सभा होने के कारण प.पू. गुरुजी तो प.पू. वशीभाई एवं संतों के साथ 25 सायं अमदावाद चले गये थे और वहाँ हेतवी टॉवर्स में पू. शैलेषभाई एवं पू. परिमलभाई आचार्य के घर ठहरे। सो, ‘पप्पाजी स्मृति सौरभ उत्सव’ की पूर्णाहुति के बाद प.पू. दीदी अमदावाद के लिये रवाना हुई। **अमदावाद** पहुँच कर दिल्ली मंदिर से जुड़े पुराने जोगी पू. रमणभाई एवं पू. दमयंती बहन पकाई के दामाद पू. शैलेषभाई शाह एवं सुपुत्री पू. मयूरी बहन की बेकरी शॉप और पू. मेहुलभाई एवं पू. धरती बहन ठक्कर के घर पथरामणी की। तत्पश्चात् पू. विपुलभाई एवं पू. दीपा बहन ठक्कर के ‘डॅंजी डिजाईनर स्टुडियो’ गये। प.पू. गुरुजी भी प.पू. वशीभाई व संतों के साथ वहाँ पथारे। यहाँ धुन-भजन करके, आइसक्रीम का प्रसाद लेकर सभी पू. विपुलभाई के घर गये। वहाँ ठाकुरजी का थाल व प्रसाद लेकर रात को हेतवी टॉवर्स ठहरने गये। दूसरे दिन सुबह प.पू. गुरुजी परम श्रद्धेय आचार्य श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराज के दर्शनार्थ जाने वाले थे, लेकिन देर रात को थोड़ी तबियत नासाज़ होने के कारण नहीं गये। सो, प.पू. वशीभाई के साथ कुछ भाई गये और उन्हें ‘साधु पर्व’ के लिये आमंत्रित करके आये। दोपहर को हेतवी टॉवर्स में ही पू. परेशभाई दोषी के घर धुन-भजन व सभी को आनंद करा कर, श्री ठाकुरजी का थाल व प्रसाद लेकर सभी एयरपोर्ट के लिये रवाना हुए और दिल्ली लौटे।



14 जनवरी से 17 जनवरी 2022

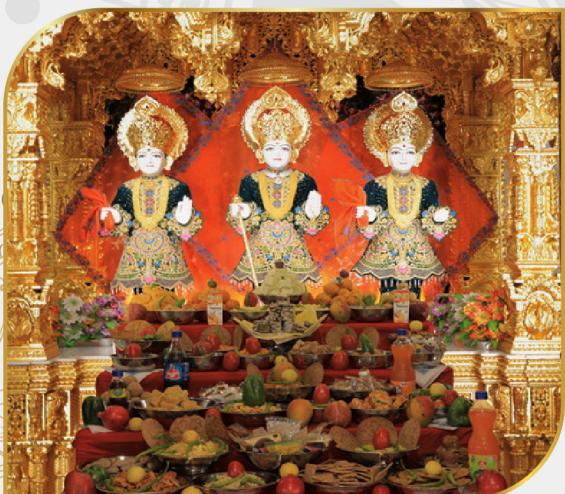
अनुपम मिशन में कलश स्थापना निमित्त शोभा यात्रा एवं महायज्ञ सहित पूजन...



‘श्री स्वामिनारायण मंदिर कलश महोत्सव’ का उद्घाटन...



## ‘कलश महोत्सव’ की महाआरती एवं पाटोत्सव...



## ‘कलश महोत्सव’ पूर्णहुति सभा की स्मृतियाँ...



## 2022 કી પૌષી પૂર્ણિમા... બની ગુણાતીત સમાજ કી ઇતિહાસિક પૂર્ણિમા!

આપકો જ્ઞાત હોગા કી 2020 મેં પૌષી પૂર્ણિમા કે મહામંગલકારી દિન હમારે અનુપમ મિશન કે નવનિર્મિત મંદિર મેં શ્રી ઠાકુરજી મહારાજ એવં ગુણાતીત સ્વરૂપ વિરાજમાન હુએ થે।

અબ દો વર્ષ પશ્ચાત् 17 જનવરી 2022 કી પૌષી પૂર્ણિમા—મૂલ અક્ષરમૂર્તિ ગુણાતીતાનંદસ્વામીજી કે દીક્ષા દિન કે શુભ-પવિત્ર દિન પર મંદિર કે શિખરોં પર કલશ-ધ્વજા કી સ્થાપન વિધિ સે યહ દિન ગુણાતીત સમાજ કે ઇતિહાસ મેં સ્વર્ણાક્ષરોં સે અંકિત હુએ। સંતભગવંત સાહેબજી કી આજ્ઞા સે આયોજિત ઇસ મહોત્સવ મેં ગુણાતીત સમાજ કે કેન્દ્રોં કે પ્રતિનિધિયોં કી નિશા મેં, સભી અનુયાયી અદ્ભુત લાભ પ્રાપ્ત કરને આતુર થે।

સો, જનવરી કે પ્રથમ સપ્તાહ તક તો અનુપમ મિશન સે જુડે દેશ-વિદેશ કે કર્ડ મુક્ત સેવા હેતુ આ ગયે થે। પરંતુ, ઉસી દૌરાન કોરોના કે પુન: બઢતે પ્રકોપ કે કારણ, સીમિત મુક્તોં કી હાજિરી મેં મહોત્સવ મનાને કા સંતભગવંત સાહેબજી ને આદેશ દિયા। અતઃ દિલ્લી સે પ.પૂ. ગુરુજી, મુંબઈ સે પ.પૂ. દિનકર અંકલ, પ.પૂ. ભરતભાઈ, પ.પૂ. વશીભાઈ એવં મુક્ત સમાજ શામિલ નહીં હો પાયા। લેકિન, ઇંટરનેટ કે માધ્યમ સે 14 સે 17 જનવરી તક સંપન્ન હુએ ઇસ મહોત્સવ કા સભી ને ઘર બૈઠ કર દર્શન-સમાગમ કિયા।

ઇસ આયોજન મેં ગુણાતીત સ્વરૂપોં એવં વરિષ્ઠ સંતોં ને ગુજરાતી ભાષા મેં જો આશિષ દી, ઉસે હિન્દી મેં સંક્ષિપ્ત પ્રસ્તુત કર રહે હૈન્...

14 જનવરી કી સુબહ કરીબ 9:30 બજે સુનહરે મયૂર રથ પર વિરાજમાન સંતભગવંત સાહેબજી મંદિર કે સમકા બની યજ્ઞશાલા મેં પથારે। રથ પર મંદિર કે છ: છોટે કલશ રખે થે, જિન્હેં સંતોં ને છ: યજ્ઞવેદિયોં પર સ્થાપિત કિયા। સંતભગવંત સાહેબજી, પ.પૂ. અશ્વિનભાઈ, પ.પૂ. શાંતિભાઈ કે દ્વારા મુખ્ય કલશોં કા પૂજન કરવા કર, ઉનકી નિશા મેં પૂ. ડૉ. મનોજભાઈ સોની એવં સુરવૃદ્ધ કે ભાઇયોં ને શાલ્કોક્ત વિધિ સે યજ્ઞ સંપન્ન કરાયા। કોરોના કે નિયમોં કા પાલન કરતે હુએ ગુણાતીત જ્યોત સે પ.પૂ. માયા બહન કુછ બહનોં કે સાથ યજ્ઞ કા લાભ લેને ઉપસ્થિત હુઈએ। અનુપમ મિશન સે જુડે ગુજરાત કે કર્ડ સ્થાનોં કે અઠારહ ગૃહસ્થ નવયુવકોં ને વિશિષ્ટ હાર કલશોં કો અર્પિત કિયા। યજ્ઞ કી પૂર્ણાહૃતિ હોને પર સંતભગવંત સાહેબજી ને આશીર્વાદ દેતે હુએ કહા—



14 जनवरी... मकरसंक्रांति का पुण्य दिन। गद्धी पर बैठने के बाद स्वामिनारायण भगवान ने रामानंदस्वामी से दो वरदान मांगे कि मेरा जो भी आश्रित हो, वह अन्ज, जल, वस्त्र से कभी वंचित न हो। उसे कभी भी भीख न मांगनी पड़े और उसके प्रारब्ध में एक बिछु के डंक का दुःख हो, तो मुझे अनंत बिछु के डंक का दुःख हो।

मकरसंक्रांति जैसे दिनों पर सभी दान-दक्षिणा देने की इच्छा रखते हैं। कहा जाता है कि आज के दिन सूर्यदेव उत्तरायण में प्रवेश करते हैं। निम्न कक्षा से उच्च कक्षा पर जीवन जीना, यही भगवान और संतों की हम से अपेक्षा है... स्वामिनारायण भगवान ने संतों और परमहंसों को आझा दी कि पूरे वर्ष आप भले विवरण करो, लेकिन मकरसंक्रांति के दिन आप भिक्षा मांगने के लिये निकलना। योगीजी महाराज, महंतस्वामी के साथ हमने सोखड़ा में भिक्षा मांगी है। तब बापा 'नारायण हरे, सच्चिदानन्द प्रभो' की अलख जगाते, जिससे सारा गाँव जाग्रत हो जाता और गेहूँ, चावल व दाल सभी देते। ऐसे दिन आज यज्ञ व पूजन करके कलश महोत्सव की शुभ शुरुआत हुई। संतों-हरिभक्तों को धन्यवाद है कि गाँव-गाँव धूम कर, सबसे कलशों का पूजन कराया। आज कलशों की अंतिम यात्रा ब्रह्मज्योति में निकली... आज हमें उनका पूजन करने का अवसर मिला। भगवान की खूब कृपा हो, तब ऐसे कार्यक्रम में उपस्थित होने का मौका मिलता है। आप सब भगवान के कृपापात्र भक्त हो... कोई भी कार्य संपन्न होता, तो बापा कहते— कलश चढ़ गये। बापा से प्रार्थना करनी है कि हमारे भी कलश चढ़ा देना। मंदिर बनाने और कलश चढ़ाने में जिस-जिसने तन, मन, धन और आत्मा से सेवा की है, उन सभी में गुणातीतभाव प्रगटे, ऐसे कलश चढ़ा देना। हम सभी का लक्ष्य है कि गुणातीतभाव को पाना, देहभाव से रहित होना और अहंकार रहित जीवन जीना। जब तक जिएं, तो अहंकार रहित, झीरोनेस पर जियें। परिस्थिति सानुकूल-प्रतिकूल केसी भी हो, लेकिन अंतर का आनंद व शांति जाये नहीं। गुणातीतभाव को पाये बिना परमानंद, शांति और सुख प्राप्त होता नहीं।

गुणातीतभाव प्राप्त करने के लिये स्वामिनारायण भगवान गुणातीतानंदस्वामी को साथ में लेकर आये। गुणातीतानंदस्वामी ने गुणातीतभाव का दर्शन कराया। वही दर्शन गुरुदेव योगीजी महाराज, प्रमुखस्वामी, काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी ने कराया। वर्तमान समय में महंतस्वामी,

शांतिभाई, अश्विनभाई जैसे करा रहे हैं। इस भाव को हमें प्राप्त करना है। हम तप, व्रत नहीं कर सकते और हमारी देह भी ऐसी नहीं कि किसी साधन से भगवान को राजी कर सकें।



भगवान को राजी करने उनकी कृपा प्राप्त करें। भगवान की कृपा किस प्रकार प्राप्त होती है? तो, **भगवान सर्वोपरि, कर्ता-हर्ता और मुङ्गे मिले सत्पुरुष द्वारा प्रगट हैं**, यूं समझ कर दो हाथ जोड़ कर उनकी आङ्गा का पालन करें, उनके कार्य में याहोम हो जायें, तब उनके राजी होने पर देहभाव पिघल जाता है।

सत्पुरुष की मरजी से मंदिर बनाना, कलश महोत्सव या ऐसे उत्सव करने का हेतु यही है कि इसके द्वारा सत्पुरुष की प्रसन्नता हम पर बरसेगी, तो हमारे जड़ स्वभाव व प्रकृति, अहंकार पिघल जायेंगे और हम सुखी-सुखी हो जायेंगे। प्रभु सब पर खूब आशीर्वद बरसायें। भगवान, साधु और ऐसा अद्भुत समाज व मानव देह मिला है, तो जाग्रतता रख कर, भगवान की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये इस देह का श्रेष्ठ से श्रेष्ठ उपयोग करना है...

महोत्सव की मंगल शुरुआत पर सद्गुरु संत प.पू. अश्विनभाई ने आशीष वर्षा की—

...गुरुदेव साहेब दादा के कहे अनुसार हम सभी के हृदय में प्रगट प्रभु की मूर्ति स्थापित हो, ऐसी आज उत्तरायण के मंगल दिन पर सभी संतों की ओर से मंगल कामना करते हैं। मंदिर, मूर्ति, शिखर, उसके ऊपर के कलश और धर्म की धजा ये पाँच प्रतीक हमारी आस्था और श्रद्धा का परिणाम हैं।

दूर से भी यदि धर्म की धजा का दर्शन हो जायें, तो मानो प्रभु और उनके धारक संत तथा मुक्तों के दर्शन हो जाते हैं...

मुंबई-दादर के पुराने मंदिर में गुरुदेव योगीजी महाराज ने एक बार आशीर्वद दिया था—

दादर मंदिर के टॉवर के ऊपर से उड़ कर जाते पक्षी का भी कल्याण होगा। हम तो मंदिर के प्रांगण में-उसकी गोद में बैठे हैं! हम सभी भगवान के सुख से सुखी हों, ऐसी हृदय भावना है। तत्पश्चात् विसर्जन प्रार्थना से यज्ञ-कलश पूजन सभा का समापन हुआ।

सायं करीब पाँच बजे भजन संध्या द्वारा हो रहे महोत्सव के शुभारंभ में भाग लेने भक्त सभा मंडप में एकत्र हुए। गुरुहरि योगीजी महाराज के वचन—‘पात्र भी मैं घड़ूँगा और ब्रह्मरस भी मैं भरूँगा’ की स्मृति करते हुए, प.पू. शांतिभाई एवं पू. डॉ. मनोजभाई सोनी ने मंडप का नाम ‘ब्रह्मकलश’ रखा था। मंच की पृष्ठभूमि पर मंदिर के शिखरों पर शोभित कलशों एवं श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज सहित सभी गुणातीत स्वरूपों की मूर्ति का दर्शन हो रहा था।

सर्वप्रथम ‘श्री स्वामिनारायण मंदिर कलश महोत्सव’ के अध्यक्ष सद्गुरु संत प.पू. अश्विनभाई ने श्री ठाकुरजी के समक्ष दीप प्रज्वलित



करके सभी की ओर से प्रार्थना की। तत्पश्चात् प.पू. अश्विनभाई एवं प.पू. शांतिभाई की निशा में अनुपम मिशन से जुड़े देश-विदेश के प्रतिनिधियों ने पाँच दीप पुंजों को प्रज्वलित करके महोत्सव का उद्घाटन किया और... कई मुक्तों ने संतभगवंत साहेबजी के समक्ष भजनों द्वारा अपना भाव प्रकट किया।

गुरुसभा के बालकों ने पू. डॉ. मनोजभाई सोनी द्वारा रचित भजन – जय खामिनारायण, जय श्री अक्षरपुरुषोत्तम... आव्यो मंदिर कलश महोत्सव दिगंतमां गाजे पङ्घम... पर नृत्यभक्ति अदा की। संतभगवंत साहेबजी वरिष्ठ संत भाईयों के संग मंच पर सभी को आशीर्वाद देने पथारे। तत्पश्चात् प.पू. शांतिभाई ने ‘कीर्तन संहिता’ भजन संग्रह का उद्घाटन किया। प.पू. अश्विनभाई ने महोत्सव की उद्घोषणा करते हुए सबका आभार व्यक्त किया –

...मेरी समझ में ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज अनेक प्रकार और स्वरूप में नयनगोचर होते जा रहे हैं। अनेक पत्रों में योगीजी महाराज ने जसुभाई पर आशीर्वद बरसाये हैं। उसमें से एक आशीर्वद था...

### आप जो संकल्प करोगे, वो पूरा होगा...

आज उनका संकल्प साकार रूप ले रहा है, उसके दर्शन का खूब आनंद है...

कलश महोत्सव निमित्त एक अन्य भजन संग्रह – ‘संप, सुहृदभाव, एकता... साहेबदादानी प्रसन्नता!’ का अनावरण संतभगवंत साहेबजी ने किया। इस संग्रह के एक भजन में संतभगवंत साहेबजी, प.पू. अश्विनभाई एवं प.पू. शांतिभाई ने संप, सुहृदभाव, एकता का मर्म स्वयं गाकर समझाया है।

प.पू. शांतिभाई ने आशीष देते हुए कहा –

...आज कलश महोत्सव मना रहे हैं। जब से मंदिर का निर्माण कार्य शुरू हुआ, तब से साहेब दादा ने हमारे हृदय मंदिर में भी प्रभु पधाराने का संकल्प किया है... साहेब ने स्वयं अपने जीवन का हेतु बताते हुए कहा है कि शाल्लीजी महाराज और योगीजी महाराज ने श्री अक्षरपुरुषोत्तम की जो उपासना स्थापी, उसे सतत गतिशील रखना ही एक उद्देश्य है। उसका दर्शन आज हम कर रहे हैं... साहेब जैसे दिव्य पुरुष हमें देने के लिये तत्पर हैं। हमारा अंतर ऐसा निर्मल और प्रकाशित हो कि आप जो देने के लिये बैठे हैं, उसे हमारे जीवन के प्रत्येक क्षण में

स्वीकार कर सकें और आचरण में लायें। आपने एकता, सुहृदभाव और आत्मीयता के बारे में बहुत बार समझाया है। पर, आज हे प्रभु, हे साहेब दादा एक ही प्रार्थना करनी है कि हमारा अंतर प्रति पल जाग्रत रहे कि आप जो समझाते हैं, उसे



સ્વીકારને કી ક્ષમતા હમ મં આયો। ફલસ્વરૂપ આપકી અખંડ પ્રસન્નતા પ્રાપ્ત કરેં... યદિ એકતા રખની હૈ, તો હમં હમારા 'સ્વ' છોડના પડે। એકતા તમી સંભવ હોણી, જબ આહું ઔર દેહભાવ પિઘલ કર મુજબમેં દાસભાવ આ જાયો। ભગવાન સ્વામિનારાયણ એવં ગુણાતીત સ્વરૂપોં કે સંબંધ વાલે સમી કે હૃદય મં એસી એકતા કા કાયજા પવકા હો જાયો ઔર આપકો પ્રસન્ન કરતે રહેં...

અંત મં સંતભગવંત સાહેબજી ને આશીર્વાદ દિયા—

...મજન-પ્રાર્થના કરકે, પ્રભુ કા બલ લેકર જો આયોજન કરતે હૈં, વહ હૃદયસ્પર્શી હોતા હૈ... કુછ ભી સંપન્ન હો યા ન હો, છોટા હો યા બડા, વો મહત્વપૂર્ણ નહીં હૈ। પર, જો કાર્ય પ્રભુ કી પ્રસન્નતા દિલાતા હૈ, વો મહત્વપૂર્ણ હૈ। સંપ, સુહૃદભાવ, એકતા ઔર મિલજુલ કર જો કાર્ય હોતા હૈ, વો સમી કે હૃદય કો સ્પર્શ કરતા હૈ। સચ, સ્વામિનારાયણ ભગવાન ઔર યોગીજી મહારાજ જેસે દિવ્ય પુરુષ કી કૃપાદૃષ્ટિ ઔર કાકા, પપ્પા, હરિપ્રસાદસ્વામી, બા કે પ્રેમ-ભાવ ઔર સમી ભક્ત સેવા મં ઓતપ્રોત હુએ, તો સારે કાર્ય ભગવાન કરતે હૈં... જબ સે બાપા કી કૃપાદૃષ્ટિ હમ સબ પર પડી, તબ સે આજ-ફસ પલ તક હમારા રિમોટ કંટ્રોલ ઉનકે હાથ મં હૈં... હમને હમારી રીતિ સે જીવન જીને કી કિતની કોશિશ કી, પર હમારી કુછ ચલી નહીં। પર, યે આશ્વિનભાઈ, શાંતિભાઈ, રતિભાઈ, વી.એ.સ., સનંદભાઈ, અલુણ જેસે સદગુરુ કી પંક્તિ મં બિઠા દેને સે સદગુરુ નહીં હુએ યા ટાઇટલ દેને સે સદગુરુ નહીં બને। યે સબ ભગવાન કી પ્રસન્નતા પ્રાપ્ત કિયે હુએ હૈં... પ્રસન્નતા સંસાર મં સે હમારી આસક્તિ છુડાતી હૈ... ચારોં ઔર અક્ષરધામ કા સુખ પ્રાપ્ત હુआ હૈ, પર યદિ અમહિમા, ભાવફેર, અભાવ-અવગુણ કી બાતોં મં રસ લેંગે, તો દુઃખી હોંગે... ઉત્સવ-મહોત્સવ ફસીલિયે હોતે હૈં કી પ્રભુ કી પ્રસન્નતા પ્રાપ્ત હોને પર હમ જહોઁ અટકે હૈં, વહોઁ સે આગે જાતે હૈં... પ્રભુ કી પ્રસન્નતા પ્રાપ્ત કરને કા મૌકા મિલા હૈ, તો સાવધાન હોકર વહ પાએ... એક જુટ હોકર ભવિત કા પરમાનંદ પ્રાપ્ત કરેં ઔર માહાત્મ્ય યુક્ત હોકર ફસકી સુવાસ ચહું ઔર પ્રસરાયેં...

અંત મં જપયજ્ઞ કે સાથ સભા કી પૂર્ણાહૃતિ હુઝી।

15 જનવરી કી સુબહ 'શ્રી સ્વામિનારાયણ કલશ મહોત્સવ માહાત્મ્ય પર્વ' મં પૂ. જીતૂભાઈ પટેલ (અમેરિકા), ગુજરાત સરકાર-રાજ્ય કક્ષ કે ગ્રામીણ મંત્રી શ્રી અર્જુન સિંહ ચૌહાન, પૂ. પરેશભાઈ પટેલ (અમેરિકા) એવં પૂ. ડૉ. મનોજભાઈ સોની ને માહાત્મ્યગાન કિયા। તત્પશ્વાત् પ.પૂ. રતિભાઈ ને 'બ્રહ્મજ્યોતિ કલશવંદના' મજન સંગ્રહ કા લોકાર્પણ કિયા ઔર પ.પૂ. શાંતિભાઈ ને કહા—



50 वर्ष पहले मंदिर निर्माण कार्य का जिन्होंने संकल्प किया और लीड कर रहे हैं, ऐसे साहेबजी को उनके साथियों ने साथ दिया। योगीबापा ने उन्हें एक-दूजे से जोड़ा। साहेब जब से वल्लभ विद्यानगर पढ़ने के लिए आए, तब अश्विनभाई, रतिकाका, हर्षद दादा, डॉ. दादा, वी.एस. दादा और ये सभी संत उनके परिचय में आए। पूर्व की प्रीति होने के कारण सभी ने साहेब को दिव्य, बड़ा, संत, गुरु व प्रभु का साकार स्वरूप माना।

साहेब अकसर कहते हैं कि अश्विनभाई, रतिकाका वगैरह बड़े क्यों माने जाते हैं? जब से उनकी साहेब के साथ मित्रता हुई और बापा के संपर्क में आने के बाद उन्हें गुरु के रूप में स्वीकारा व स्थान दिया, तब से आज तक उन्होंने कोई प्रश्न नहीं पूछा। योगीबापा ने जैसा कहा, उन्होंने वैसा किया और 1971 में बापा के अंतर्धान होने के बाद, साहेब को बापा का स्वरूप मान कर उन्हें अपना जीवन समर्पित किया...

देश-विदेश में मंदिरों का निर्माण होने से इन संतों का साहेब के साथ संबंध दृढ़ होता गया। फलस्वरूप उनके हृदय में प्रभु व साहेब विराजमान हुए, जिसकी अनुभूति हम सभी को हो रही है। भीतर में प्रभु विराजमान होने का अर्थ साहेबजी ने कहा बार समझाया है— **मन-बुद्धि वितर्क न करे, सभी का सहजता से स्वीकार करें। सुहृदभाव रखने का प्रयत्न करें। सुहृदभाव रखेंगे, तो दासभाव प्राप्त कर पायेंगे...**

इन बातों को पकड़ कर जीवन व्यतीत करने का प्रयत्न करना ही साहेब को प्रभु का स्वरूप माना कहा जाए। जिन्होंने समग्र साधना कराई, हठ, मान, इर्ष्या, राग, द्वेष से निजात दिलाई, भगवान के संबंध गले सब को यूं दिव्य मान कर वर्तने गले साहेबजी रोम-रोम में बस गए। परिणाम स्वरूप आँखें खोल कर जगत को और मूँद कर जब अंतर में देखता हूँ, तो सर्वत्र प्रभु का दर्शन होता है। सब में प्रभु का दर्शन करना है, वे दिव्य हैं और सब का दास बनना है। ये ज्ञान जो शास्त्र में था, उसे इन दिव्य पुरुषों ने अपने संकल्प से हमारे हृदय में स्थापित किया है... मंदिर निर्माण में जो भी तन, मन, धन और आत्मा से सेवा करते हैं, उन सभी की आत्मशुद्धि होती है। उनके हृदय में प्रभु विराजित होते हैं। सभी के राग-द्वेष टल जाते हैं, अहंता-ममता छूट जाती है और 'स्व' रहित हो जाते हैं...

दिव्य पुरुषों का संकल्प शाश्वत काल तक काम करता रहता है... आज शिखर पर कलश चढ़ रहे हैं। तो, सुहृदभाव, आत्मीयता, दिव्यभाव का कलश और साहेब दादा की महिमा का स्वर्ण कलश हमारे हृदय में भी स्थापित करना है... उपासना की दृढ़ता हो जाये ऐसे कलश चढ़ाने हैं...

**योगीबापा** ने साहेब को आशीर्वाद दिये— **तुम्हारा हृदय भगवा करना है।**

आज साहेब हम सब का हृदय भगवा करके भगवान का सुख बांट रहे हैं। **हमारा बहुत बड़ा भाग्य है कि ऐसे सत्पुरुष हमारे जीवन में आए।** उनके संकल्प से हम सुखी हैं... हे दयालु! हे महाराज! हे योगीजी महाराज! आप हमारे लिए इस धरती पर मानवरूप में आए। सभी गुणातीत स्वरूप हमारे लिए इस धरती पर पथारे और हमारा हाथ थामा, हमें स्वीकारा। हमारे दोष टल रहे हैं, इसकी अनुभूति वे ही हमें करा रहे हैं... जो ज्ञान आपने हमें दिया, वैसा जीने हम तत्पर रहें। सभी मुक्तों में प्रति पल आप जैसे योगीजी महाराज को देखते हैं, यह हम केवल बोलें नहीं, पर हमारे वर्तन में हो...।

**संतभगवंत साहेबजी** की प्रेरणा से कलश महोत्सव की एक विशिष्ट स्मृति भेंट बनाई थी। जिसमें **पीपल** के पत्ते के आकार के स्वर्ण पत्र पर, कमल के पुष्प में श्री मुक्ताक्षर पुरुषोत्तम महाराज की मूर्ति सहित शिक्षापत्री का श्लोक— निजात्मानं ब्रह्मलं पं एवं साहेबजी के हस्ताक्षर थे। गणमान्य अतिथियों एवं भक्तों ने सद्गुरु संतों के वरद् हस्तों से यह सम्मान पत्र प्राप्त किया। अंत में **संतभगवंत साहेबजी** ने अपने निम्न आशीर्वचन द्वारा मुक्तों को अद्भुत प्रतिज्ञा कराई— योगीबापा अकसर कहते थे कि वे अलौकिक पुरुष हैं।

**लौकिक यानि— मन, बुद्धि, चित्त, अहंता की भूमिका से प्रगटे हुए मूल्याकंन।**

**अलौकिक यानि— मन, बुद्धि, चित्त, अहंता की भूमिका से परे के मूल्याकंन।**

महाराज, गुणातीतानंदस्वामी, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, प्रमुखस्वामी, महंतस्वामी, हरिप्रसादस्वामी, अक्षरविहारीस्वामी, गुरुजी, अश्विनभाई, शांतिभाई इन सब की बात अलौकिक है।

हम पर भगवान की अति कृपा है कि हम यह बात समझ पाए।

मेरे साथ सभी यह ब्रह्मसूत्र बोलें—

हमारे इष्टदेव स्वामिनारायण भगवान हैं। मेरे लिए सर्वोपरि हैं व मेरे हृदय में उनका स्थान सर्वोपरि है। मेरे पल-पल के कर्ता-हर्ता स्वामिनारायण भगवान ही हैं। वे भगवान मुझे गुणातीत साधु द्वारा साकार व प्रगट मिले हैं। उनसे आत्मबुद्धि व प्रीति दृढ़ करना ही मेरे जीवन का श्रेष्ठ कार्य है। उनकी आज्ञा में रह कर प्रवृत्ति करना ही मेरी अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना है। अहोहोभाव, निर्दोषभाव, दिव्यभाव और मन, कर्म व वचन से मुक्तों की सेवा करना ही प्रभु की प्रसन्नता प्राप्त करने का श्रेष्ठ उपाय है।

यह बात हमें बार-बार इसलिए दोहरानी पड़ती है, क्योंकि यह बात



अलौकिक है।

भगवान्धारक सत्पुरुष भगवान नहीं हैं, परंतु उनके द्वारा व उनमें रह कर भगवान हमें दर्शन व आशीर्वाद देते हैं। भगवान स्वामिनारायण ने हमें दो वरदान बस्तिशश दिए—

**पहला—** वडताल में महाराज ने स्वयं हरिकृष्ण महाराज की मूर्ति स्थापित करके आशिष दिए कि मैं इस ब्रह्मांड में अखंड प्रगट रहूँगा। यूँ कह कर भगवान स्वामिनारायण ने 'स्थावर तीर्थ' की स्थापना करी।

**दूसरा—** गुणातीत साधु द्वारा पृथ्वी पर अखंड रहूँगा... यह आशिष देकर, 'जंगमतीर्थ' की स्थापना करी।

योगीजी महाराज गुणातीतभाव को पाए हुए साधु थे। इनके द्वारा भगवान अखंड प्रगट थे। बापा ने दादुकाका को नंदाजी को साबरकांग का इलेक्शन जिताने की आज्ञा करी थी। काकाजी ने आज्ञा शिरोधार्य करी, जिसके फलस्वरूप बापा ने उन्हें साशात्कार कराया और काकाजी भगवान्धारक ब्रह्मस्वरूप साधु बन गए...

यदि, प्रगट सत्पुरुष की आज्ञा अनुसार प्रवृत्ति करेंगे, तो ही भगवान के अंतर की प्रसन्नता प्राप्त होगी और हठ, मान व ईर्ष्या के विकार टल जाएंगे...

बापा, गुणातीतानंदस्वामी के दीक्षा दिन की बहुत महिमा गाते थे कि महाराज ने गुणातीतानंदस्वामी को दीक्षा देकर समग्र सत्संग समाज को सनाथ किया। महाराज के रहने का धाम गुणातीतानंदस्वामी थे। अक्षरधार्मरूप साधु इस धरती पर अखंड रहेंगे, यह वरदान देकर हमें निहाल कर दिया...

गुणातीतभाव प्रगटाना, दासत्वभाव से भक्ति करना व सब को प्रभुरूप मान कर मन, कर्म, वचन से सेवा करना—अक्षरधार्म के मुक्त का लक्षण हैं। इस भूमिका पर पहुँचने के लिए ऐसे उत्सव व समारोह का आयोजन होता है। सेवा ही एक माध्यम है जिसके द्वारा संप, सुहृदभाव व एकता से मिल-जुलकर, एक-दूसरे का स्वीकार करके पूरक बनते हैं। फलस्वरूप भगवान राजी होकर हमारे स्वभाव, प्रकृति व देहभाव की कसर टाल देते हैं। बापा ने हमें विशिष्ट आज्ञा करी थी कि दादुभाई जो कहें वह करना। इसलिए काकाजी हमारे लिए बापा का ही स्वरूप थे। काकाजी की प्रत्येक आज्ञा को बापा की आज्ञा मान कर जीवन जीया...

गुणातीत साधु की आज्ञा में रह कर संप, सुहृदभाव व एकता से भक्ति करेंगे, तो गुणातीतभाव का कलश चढ़ जाएगा...

**15 जनवरी** की सायं अनादि अक्षरब्रह्म 'श्री गुणातीतानंदस्वामीजी महादीक्षा

**माहात्म्य पर्व** हेतु सभी 'ब्रह्मकलश' में एकत्र हुए। पू. बिमलभाई पटेल - अमेरिका व पू. भाविशा बहन ने प्रासंगिक उद्बोधन किया और फिर पू. सतीशभाई चटवाणी - लंदन ने विडीयो द्वारा माहात्म्यगान किया। तत्पश्चात् ऑडियो 'साधु रे साधो' कीर्तन संग्रह का संतभगवंत साहेबजी ने अनावरण किया। सदगुरु संत प.पू. अश्विनभाई ने गुणातीत दीक्षा माहात्म्य के उपलक्ष्य में आशीर्दान दिया—

...जिनके द्वारा भगवान् श्री स्वामिनारायण इस सृष्टि पर मनुष्य कल्याण हेतु सदैव के लिए उपस्थित हैं, उन्हें हम गुणातीतानंस्वामी के रूप में पहचानते हैं... **गुणातीत दीक्षा दिन यानि साधु की महिमा समझाने का दिन!** भगवान् जिनमें अखंड निवास करते हैं, वो गुणातीत साधु की परिभाषा है। उन्हें भगवान् का अखंड अनुसंधान रहता है। ऐसे गुणातीत साधु हैं योगीजी महाराज! **शास्त्रीजी महाराज** कहते थे—

मुनि वेद व्यासजी ने भगवत् गीता में साधु के 64 लक्षणों का वर्णन किया है। यदि उनसे कोई गुण लिखने रह गए होंगे, तो उसका दर्शन योगीजी महाराज के जीवन से होता है। **योगीजी महाराज की गुणातीत रिथति यानि दासत्वभवित्ति!**

बापा से किसी ने पूछा— आपने ब्राह्मी रिथति कैसे प्राप्त करी?

बापा ने उत्तर दिया— बरतन धोने की सेवा करके...

यूँ, बरतन धोने से बापा को ब्रह्मज्ञान प्राप्त हुआ। वह ब्रह्मज्ञान क्या कि **मैं अक्षर हूँ, आत्मा हूँ!** **मेरे भीतर परमात्मा-परब्रह्म पुरुषोत्तम नारायण अखंड विराजमान हैं...**

ऐसा अखंड अनुसंधान रहे और इस प्रकार जीवन जीने का निरंतर प्रयास करते रहें, तो हृदय में दिन-प्रतिदिन प्रभु की अनुभूति दृढ़ होती जाती है... सो, हमें मिले गुणातीत साधु की स्मृति व उनके दिए वचन को अपने जीवन-आचरण में लाने के लिए हृदयस्थ करें...

...पिछले पचास साल से **साहेब दादा** के साथ रहते हुए उनकी गुणातीत रिथति का दर्शन हो रहा है। **किसी भी साधक या भक्त का कोई भी सूचन हो,** उसे वे मानते हैं कि उसमें **महाराज व मेरे गुरुदेव योगीजी महाराज प्रवेश होकर मुझे सूचन दे रहे हैं...**

एक साधक ने मुझसे साधना के विषय में पूछा कि शीघ्रातिशीघ्र ब्राह्मी रिथति कैसे प्राप्त होती है?

मैंने कहा— इस बात का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। मानो, आपके पास गाड़ी है और घोर अंधेरी रात में ड्राईव करना है। उसकी हेडलाइट की रोशनी से कम से कम दस फुट तक का रास्ता आपको नज़र आएगा। फिर



गाड़ी जैसे-जैसे आगे बढ़ती जाएगी, वैसे-वैसे उसका प्रकाश आगे बढ़ता जाएगा। इसी प्रकार जैसे-जैसे हम जीने लगेंगे, गुणातीत ज्ञान का कायज़ा हमें समझ आने लगेगा...

गुणातीतानंदस्वामी के अनुसार जिन्हें भगवान् व गुणातीत साधु का जोग हुआ, उसके लिए वही अक्षरधाम है। जीतेजी हमें अक्षरधाम का सुख प्राप्त हुआ है, तो अब साथी-मुक्तों के साथ संप, सुहृदभाव व एकता से जीने लगें...

जिस प्रकार माँ बालक को नहला-धुला कर, साफ-सुथरा करके पिता को सौंपती है। उसी प्रकार गुणातीत माँ यानि साधु हमारे स्वभाव, प्रकृति, हठ, मान व ईर्ष्या की ग्रंथियों को पिघला कर प्रभु के श्रीचरणों में अर्पित करने योग्य बनाते हैं।

गुणातीत दीक्षा दिन तो गुणातीत गुरु को हृदय से स्वीकार करके प्रार्थना करने का दिन है। हमारे जीवन आचरण में प्रगट प्रभु के अनुरूप ही वाणी, वर्तन और विचार हो ऐसा संकल्प करें। यह भाव जब हमारे भीतर प्रगटेगा, तब गुरु कृपा से पाँचों इंद्रियों पवित्र बनेंगी व प्रभु यानि धर्म की ध्वजा लहरायेगी...

**16 जनवरी** की सुबह अनुपम मिशन में प्रति वर्ष आयोजित होते 'शालीन मानव रत्न सम्मान समारोह' में प.पू. हंसा दीदी, प.पू. माया बहन के साथ दर्शन का लाभ देने पदार्थी। सदगुरु संत प.पू. अश्विनभाई ने उत्तर प्रदेश की राज्यपाल माननीय श्रीमती आनंदी बहन पटेल के साथ-साथ शालीन मानव रत्न सम्मान प्राप्त करने आये डॉ. श्री भरतभाई दवे एवं डॉ. श्री पार्थिवभाई महेता का स्वागत एवं आभार प्रकट किया। वैश्णवाचार्य गोस्वामी 108 परम पूज्य श्री व्रजकुमारजी अपना लाभ देने उत्सव में आये। मंचस्थ स्वरूपों एवं महानुभावों का हार से स्वागत किया गया। सम्मान पत्र एवं कलश महोत्सव की स्मृति भेंट प्राप्त करके श्रीमती आनंदी बहन ने प्रासंगिक उद्बोधन किया। **संतभगवंत साहेबजी** ने आशीर्वाद दिया। तत्पश्चात् अन्य दो डॉक्टर्स का सम्मान पत्र एवं स्मृति भेंट से अभिवादन किया गया। दोनों ने संतभगवंत साहेबजी के प्रति अपना भाव व्यक्त किया।

200 वर्ष पहले मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी की महिमा स्तोत्र पूज्य अचिंत्यानंद ब्रह्मचारीजी ने लिखे थे। उन्हें अनुपम मिशन स्वरवृद्ध के संतों-सेवकों ने गान करके रिकॉर्ड किये। सो, 'श्रीगुणातीतानन्दमहिम्नस्तोत्रम्' कीर्तन संग्रह का विमोचन करके वैश्णवाचार्य गोस्वामी

108 परम पूज्य श्री व्रजकुमारजी ने आशीर्वाद दिया। अनुपम मिशन के सदगुरु संतों ने उनका अभिनंदन किया और अंत में **संतभगवंत साहेबजी** ने सम्मान प्राप्त किये तीनों गणमान्य अतिथियों के गुणों का वर्णन करते हुए पुनः आशीर्वाद दिया।

**16 જનવરી કી સાયં** અર્થાત् પૌષી પૂર્ણિમા કી પૂર્વસંધ્યા પર વિડિયો પ્રસ્તુતિકરણ કા આયોજન થા। આરંભ મેં ગુણાતીત સમાજ કે સર્વપ્રથમ વ્રતધારી યુવક પૂ. ગોરધનકાકા મર્ચંટ દ્વારા રચિત ભજન ‘યોગી તારા ગાવામાં ગુણગાન...’ સુનતે હુએ સમી ને ગુરુહરિ યોગીજી મહારાજ કી વિભિન્ન મુદ્રાઓ કા દર્શન કિયા। કોરોના કે કારણ ન્યૂજીલેન્ડ ઔર આસ્ટ્રેલિયા કે ભક્ત ભારત આને મેં અસમર્થ રહે, તો ઉન્હોને કલશ કી આકૃતિયાં બના કર અપને-અપને ઘર પર પૂજન કિયા। સાથ હી સાથ, બહનોં ને ભવિત્વનૃત્ય સે અપના આનંદ પ્રકટ કિયા। જિસકા વિડિયો દ્વારા દર્શન કિયા। અંત મેં સંતભગવંત સાહેબજી કી પ્રેરણ સે અનુપમ મિશન દ્વારા નિર્મિત મંદિરોં એવં ઉનકે દ્વારા કિયે જા રહે સામાન્યિક, રાષ્ટ્રીય એવં આધ્યાત્મિક કાર્યોં કી ઝાંખ્ખિયોં સે સમી તૃપ્ત હુએ।

**17 જનવરી કી સુબહ-પૌષી પૂર્ણિમા, મૂલ અક્ષરમૂર્તિ ગુણાતીતાનંદસ્વામીજી કે દીક્ષા દિન પર ‘કલશ મહોત્સવ પૂર્ણાહૃતિ પર્વ’ મેં, મયૂર રથ પર વિરાજમાન સંતભગવંત સાહેબજી ને સમા મંદપ મેં પ્રવેશ કિયા। ‘પધાર્યા હૃદયાધિરાજ...’ કી ગૂજ કે સાથ કરીબ પચાસ યુવકોં ને મંદિર, ગુણાતીત સમાજ એવં અનુપમ કે ધ્વજ કો ફહરાતે હુએ સ્વાગત કિયા। મંચ પર સંતભગવંત સાહેબજી કે વિરાજમાન હોને કે બાદ, આઠ મુક્તોં ને ‘કર્મયોગી દીક્ષા’ પ્રાપ્ત કી। પ.પૂ. નિર્મળસ્વામીજી, પ.પૂ. પ્રેમસ્વરૂપસ્વામીજી, પ.પૂ. બાપુસ્વામી એવં વૈશણવાચાર્ય ગોસ્વામી 108 પ.પૂ. દ્વારકેશલાલજી સમા મેં પધારે। મંચસ્થ સ્વરૂપોં એવં ગણમાન્ય અતિથિયોં એવં બહનોં કે વિભાગ મેં ગુણાતીત જ્યોત કી પ.પૂ. માચા બહન એવં હરિધામ-ભવિત આશ્રમ કી પ.પૂ. સર્વેશ્વર બહન કા હાર સે સ્વાગત કિયા।**

કર્મયોગી દીક્ષા પ્રાપ્ત કિયે આઠ મુક્તોં કા પરિચય દેતે હુએ પ.પૂ. અશીવનભાઈ ને આશીર્વાદ દિયા।

ભગવાન સ્વામિનારાયણ કે સમય પૂજ્ય દીનાનાથ ભટ્ટ ને ‘શ્રી નારાયણ સ્તવનાષ્ટકમ्’ રચા થા। અનુપમ મિશન સ્વરંદ કે ભાઇયોં ને ગાકર ઉસકી ઓફિચિયલ તૈયાર કી થી। વૈશણવાચાર્ય ગોસ્વામી 108 પ.પૂ. દ્વારકેશલાલજી ને ઉસકા અનાવરણ કરકે આશીર્દાન દિયા। તત્પશ્ચાત્ પ.પૂ. પ્રેમસ્વરૂપસ્વામીજી ને આશીર્વાદ દિયા—

...હમ સબ ખૂબ ભાગ્યશાલી હોએ કી અક્ષરપુરુષોત્તમ કી શુદ્ધ ઉપાસના કરાને કે લિએ ગુણાતીત પુરુષોને હમારા હાથ થામા। શાસ્ત્રીજી મહારાજ વ યોગીજી મહારાજ ને અપમાન, ઉપેક્ષા વ તિસ્કાર સહન કરકે હમ સબ કે લિએ સાધના કા સુગમ માર્ગ પ્રસ્તુત કિયા વ અક્ષરપુરુષોત્તમ કી શુદ્ધ ઉપાસના બદ્ધીશ મેં દી...



**गुणातीतानंदस्वामी** की तीन बातें हमें अपने जीवन में सिद्ध करनी हैं—

\* भगवान के जिस स्वरूप की हमें प्राप्ति हुई है, उनके सिवा कहीं और सुख खोजना व्यर्थ है।

\* अच्छे साधु का संग करना।

\* साधु की मरजी में रहेंगे, तो भगवान निरंतर राजी रहेंगे।

...बड़े सत्पुरुष से हमें लगाव व प्रेम होगा, तो साधना मार्ग पर अग्रसर होने की प्रेरणा भी वे ही देते हैं... हम केसे भी हों, परंतु उनका प्रेम हमें इस मार्ग पर खींच लाता है...

**गुणातीतानंदस्वामी** ने अपनी बातों में कहा है—

\* सत्पुरुष से लगाव हो, पर उनका वचन न माना जाये...

\* सत्पुरुष के प्रति प्रेम हो, पर उनका विश्वास न हो पाये...

\* सत्पुरुष के प्रति विश्वास हो, पर उनसे निष्कपटभाव का संबंध न हो पाये...

आँकड़ीज्ञन से भी विशेष साधकों के लिए ये बातें समझने योग्य हैं कि ऐसा न हो...

भगवान स्वामिनारायण ने आशिष बरसाए कि अपने गुणातीत संतों द्वारा धरती पर अचलंड रहेंगे। काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, अक्षरविहारीस्वामीजी, गुरुजी, साहेबजी जैसे गुणातीत पुरुष हमें मिले और उन्होंने हमारा हाथ थामा, हमें प्रेम दिया...

महाराज ने वचनामृत मध्य 13 में कहा है— मेरी दृष्टि में कोई छोटा-बड़ा नहीं है।

महाराज के इस कथन का दर्शन हमें साहेब के जीवन से होता है। उनके लिए कोई छोटा-बड़ा नहीं है। सबको एक समान प्रेम देते हैं। सभी गुणातीत पुरुषों का जीवन ऐसा ही है...

**गुणातीतानंदस्वामी** ने अपनी बातों में कहा है— **अच्छे साधु का संग करना। वह संग क्या?**

सत्पुरुष का वचन आत्मसात् करना ही संग करना कहा जाए।

उनके वचन में विश्वास रहे, उनके समक्ष सरल वर्ते और मन-बुद्धि के तर्क लगाए बिना उनके प्रत्येक वचन को सहजता से स्वीकारें और उस प्रकार वर्तने का सहज मन हो— यही संग करना कहा जाए...

हम सब गुणातीत बाग के हैं और सत्पुरुष हमारा पालन-पोषण कर रहे हैं। अपने निव्याज प्रेम से हमारे अंतर को झँझोड़ कर, अपना संबंध देने के लिए जो परिश्रम कर रहे हैं, तो हम उन्हें

साथ दें।

स्वामीजी अक्सर कहते थे— हमने कोई परिश्रम नहीं किया, परंतु बापा ने हमें सुखी कर दिया।



- \* स्वामीजी ने बापा का संप, सुहृदभाव और एकता का अभिप्राय पहचाना! और... अपने जीवन की अंतिम श्वास तक सुहृदभाव के पथ पर चले और अन्यों को भी प्रेरणा दी।
- \* बापा ने कहा है— युवक मेरा हृदय हैं...
- बापा के इस कथन को शिरोधार्य करते हुए स्वामीजी ने युवा प्रवृत्ति को एहिमयत दी।
- \* विपरीत संजोगों में केवल भगवान् स्वामिनारायण और बापा की मरज़ी का ही आधार लिया।
- \* भगवान् स्वामिनारायण, गुणातीतानंदस्वामी और योगीजी महाराज के प्रति उन्हें **कभी अविश्वास नहीं आया।**

हे साहेब! आज के मंगलकारी दिन आपसे यही प्रार्थना कि हमें ऐसा बुद्धियोग मिले कि— गुणातीतानंदस्वामी की बातों के अनुसार हम अपना जीवन जियें।

बापा, काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, आपके अभिप्राय को पहचान कर, उसके अनुसार जीवन जिएं। गुणातीत स्वरूपों के जीवन में निरंतर निमग्न रहें। निमग्न रहने का अर्थ स्वामीजी ने बताया है—

भगवान के संबंध वाले मुक्तों के पास 'स्व' का विसर्जन करना।

साहेब के जीवन में यह सहज दिखता है। जिस प्रकार साहेब ने बापा का सेवन किया, सदैव सरल व निर्विचार वर्ते, ऐसे हम जियेंगे, तो हमारी प्रगति होगी...

विदेश के मुक्त संतभगवंत साहेबजी की परावाणी से लाभांवित हो सकें, इस भावना से पू. भाविशा बहन ने अंग्रेजी में भावानुवाद किया है। समय-समय पर 'स्पीरीच्युअल इसन्स' पुस्तक के पाँच भाग अनावृत हो चुके हैं। महोत्सव निमित्त इसके छठे भाग और 'छे माहात्म्यसभर वाणी सदा - भाग 9' का पू. डॉ. जीतूभाई पटेल एवं पू. विजयभाई ठक्कर ने लोकार्पण किया।

संजोगवश प.पू. गुरुजी इस महोत्सव में नहीं जा पाये, लेकिन विडियो द्वारा उन्होंने निम्न आशीर्वाद भेजा—

गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज की कृपा से मांदिरों द्वारा श्री अक्षरपुरुषोत्तम की युगल उपासना का मूल रहस्य चहुँ और फैला और... मुमुक्षुओं को एकांतिक धर्म सिद्ध कराने साधुता की क्षितिज समान अक्षरब्रह्म गुणातीतानंदस्वामी प्रगट हुए। स्वयं पूर्ण ब्रह्म होने के कारण पूर्णता को ही अपने जीवन में स्थान दिया।



- \* अश्विनी पूर्णिमा- शरदपूर्णिमा पर प्रगटे।
  - \* कार्तिकी पूर्णिमा पर महाभिनिष्ठमण किया और
  - \* **पौषी पूर्णिमा** पर भगवान् स्वामिनारायण के वरद् हस्त 'भागवती दीक्षा' प्राप्त करी। शेरनी का दूध स्वर्ण पात्र में ही टिक सकता है। इसलिये जूनागढ़ मंदिर की मूर्तियों की प्राणप्रतिष्ठा के समय श्रीजी महाराज ने आशीर्वद देते हुए कहा था—  
 'ये गुणातीतानंदस्वामी—जो मेरा अक्षरधाम हैं, वे यहीं—जूनागढ़ में ही रहेंगे। जो उनका दर्शन-समागम करेगा, उनका मैं जीतेजी ही कल्याण करूँगा।'
- बापा भी ऐसे ही विज्ञनरी पुरुष होंगे कि साहेब के लिये बोले थे—
- जश्वभाई हमारे भागीदार हैं...**

1967 में बापा की मरज़ी जान कर काकाजी, पप्पाजी और सोनाबा ने उन्हें व उनके साथीदारों को 'नेकटाई साधु' की दीक्षा देकर 'कर्मयोगी साधु' बनाया।

यह अनोखी 'मन्त्र दीक्षा' उस समय कङ्गयों के दिमाग़ में फिट नहीं बैठी, लेकिन आज साहेब और उनके साथीदार—अश्विनभाई, शांतिभाई द्वारा एक युगकार्य की गंगोत्री प्रवाहित हो रही है। चैतन्यलक्षी अनुपम कार्य की यह दिव्यगाथा शाश्वत् गूंजती रहेगी।

किसी भी कार्य का शुभारंभ करने के लिये 'पौषी पूर्णिमा' बहुत ही पावनकारी-मंगलकारी मानी जाती है।

इसीलिये 2020 की पौषी पूर्णिमा-10 जनवरी को तपोभूमि ब्रह्मज्योति के प्रांगण में नवनिर्मित मंदिर में श्री ठाकुरजी की प्राण प्रतिष्ठा हुई थी, जिसका दर्शन करने का हमें अवसर मिला और

अब 2022 की पौषी पूर्णिमा-17 जनवरी को मंदिर के शिखरों पर कलश स्थापित हो रहे हैं। कोरोना के कारण हम आ तो नहीं सके, लेकिन दिल तो वहीं है।

कलश का रहस्य समझाते हुए शास्त्र लिखते हैं कि—

**संजोगवश कोई यदि मंदिर न जा सके, पर बाहर से कलश और ध्वजा का दर्शन करके प्रणाम करेगा, तो मंदिर के अंदर जाकर श्री ठाकुरजी के दर्शन करने जितना ही पुण्य मिलता है।**

यहाँ तो मंदिर के प्राणपुरुष साहेब की निशा में भगवान् भजते संत भाइयों

का दर्शन, सेवा और समागम मिलता है; वो सभी को जन्म-मरण के चक्र और प्रारब्ध-प्रकृति से मुक्त करेगा ही।

कई कहते हैं कि मंदिरों की क्या ज़ल्लरत है? हम बालक को कींडरगार्डन में इसलिये भेजते हैं कि घर के संकुचित दायरे से बाहर निकल कर, वह अन्य व्यक्तियों के साथ मेल-जोल सीखें। इसी प्रकार, जीव को हठ, मान, ईर्ष्या के दायरों में से मुक्त कराने प्रभु और ऐसे संत की कृपादृष्टि चाहिये।

हम बहुत भाग्यशाली हैं कि भगवान् स्वामिनारायण ने हमें अपनी अखंड गुरु परंपरा के संतों—योगीजी महाराज, काकाजी महाराज, पप्पाजी महाराज, प्रमुखस्वामी महाराज, महंतस्वामी महाराज, स्वामीजी, साहेब, अक्षरविहारीस्वामीजी की गोद में बिठा दिया।

इनके द्वारा अदारपुरुषोत्तम महाराज की प्रगट की युगल उपासना का जयघोष देश-विदेश में हो रहा है।

- \* मंदिर भक्तों की तृष्णा मिटाते हैं।
  - \* मंदिर भक्ति और सेवा का पोषण करते हैं।
  - \* मंदिर मनुष्यमात्र को सुखी करने के लिये संस्कृति का जतन करते हैं।
  - \* मंदिर चरित्र निर्माण का अद्वितीय माध्यम हैं और आस्था व श्रद्धा का अद्भुत केन्द्र हैं।
- मंदिर की कलशविधि हो रही है, तब 1986 की 26 जनवरी पर **काकाजी** द्वारा दिये आशीर्वद मेरे अंतर में गूंज रहे हैं—

‘गुणातीत भावना वाले साधु बनो...

हमें ऐसा साधु बनना है जहाँ ‘मन का आभास’ भी न हो...

हमें शास्त्री महाराज और योगी महाराज की खूब शोभा बढ़ानी है...’

तो, काकाजी, पप्पाजी और स्वामीजी भले ही आज स्थूल देह से हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन ये विभूतियाँ सनातन हैं—इनके आशीर्वचन भी सनातन हैं।

साहेब, सद्गुरु भाइयों और भक्तों की अनुपम गुरुभक्ति देख कर वे खूब राजी होते होंगे।

योगी परिवार के हम सभी यह गौरव और गरिमा को संभाल कर, बढ़ाने का उद्यम करते ही रहें—यही आज के शुभ मंगलकारी दिन अभीप्सा और प्रार्थना...

सद्गुरु संतों ने प.पू. निर्मलस्वामीजी, प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी एवं प.पू. बापुस्वामीजी को महोत्सव की स्मृति भेंट से सम्मानित किया। अंत में



सभी का आभार और 'स्वामिनारायण मंदिर कलश महोत्सव' की जय बुलाते हुए  
संतभगवंत साहेबजी ने निम्न आशीष वर्षा से महोत्सव की पूर्णाहुति की—

...गुणातीत दीक्षा दिन हम सब के लिए शुभ व मंगलकारी दिन है। भगवान् स्वामिनारायण ने गुणातीतानंदस्वामी की भेंट देकर हमें निहाल कर दिया... स्वामिनारायण संप्रदाय की नींव स्थापित हुई... संतों व भक्तों के असाधारण प्रेम व समर्पण से मंदिरों का निर्माण संभव हुआ... भगवान् स्वामिनारायण ने आशिष दिए कि मैं अपने गुणातीत साधु द्वारा मैं पृथ्वी पर अखंड प्रगट रहूँगा। सो, ऐसे साधु से आत्मबुद्धि व प्रीति से जुड़े रहना। उनकी आङ्ग भूमि में रहना व भक्तों के साथ सुहृदभाव रखना...

गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज व योगीजी महाराज ने अक्षरपुरुषोत्तम के अनादि स्वरूपों की पहचान कराई... बापा ने जब से मेरा हाथ काकाजी को सौंपा, तब से काकाजी को मैंने बापा का स्वरूप माना। बापा ने हमें दादुकाका की आङ्ग में रहने का आदेश दिया। फिर, 1967 में काकाजी ने हमें पप्पाजी की आङ्ग में रहने का आदेश दिया। पर, काकाजी के प्रति मुझे बहुत प्रेम...

योगीजी महाराज कहते थे— महिमा की कसर के कारण, हमें बार-बार जन्म लेना पड़ता है... सो, योगीजी महाराज ने अपने संकल्प से यह महिमा प्रसारित की कि भगवान् सदा साकार, दिव्य व कर्ता-हर्ता हैं। गुणातीत साधु द्वारा वे प्रगट हैं। उनके संबंध गले दिव्य हैं और उनकी अमहिमा व झङ्झट में नहीं पड़ना...

गुणातीतानंदस्वामी ने कहा है—

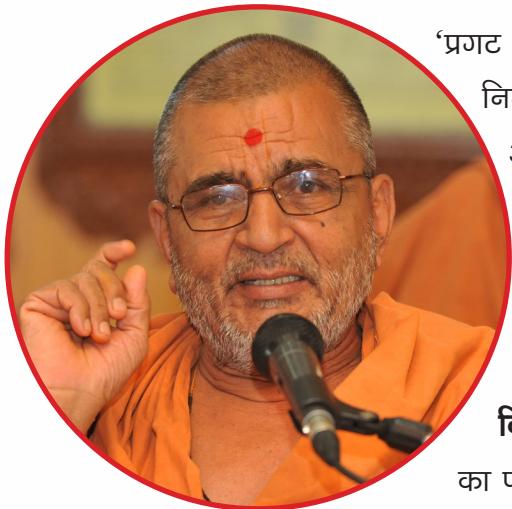
यदि हो सके तो सेवा करना, पर असेवा तो करना ही नहीं। चौधराहट करने जाओगे, तो डंडे पड़ेंगे। संबंध गले सभी निर्दोष व दिव्य हैं।

सो, भक्तों के गुणगान व महिमा गाया करें व सुनें। प्रभु को राजी करने के भाव से सेवा करेंगे और भक्तों में निर्दोषभाव रखेंगे, तो हठ, मान और ईर्ष्या के विकार टल जायेंगे। हृदय में भगवान् का सुख प्राप्त होगा...

संप, सुहृदभाव व एकता के लिए जो कुछ छोड़ना पड़े, उसे विशिष्ट त्याग कहा जाए। वो करने लग पड़ें, वही सच्चा समर्पण और भक्ति है। ऐसे वर्तने का प्रभु हमें अहोनिश बल, बुद्धि व प्रेरणा दें, यही आज के मंगल अवसर पर प्रार्थना...

यौं, 'कलश महोत्सव' की अद्भुत स्मृतियाँ सभी ने अपने अंतर में संजो कर शाश्वत् कीं।

## ब्रह्मलीन प.पू. शास्त्रीजीस्वामीजी को श्रद्धा सुमन...



‘प्रगट प्रभु’ को ही सर्वस्य मान कर व भजन-भक्ति में निमग्न एवं गुरुहरि योगीजी महाराज के कृपापात्र और गुरुहरि काकाजी, पप्पाजी एवं हरिप्रसादस्वामीजी के लाड़ले 81 वर्षीय प.पू. शास्त्रीस्वामीजी ने करीब छः महीने से ब्रेइन ट्र्यूमर की बीमारी ग्रहण की थी। गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों में उनकी तबियत का समाचार मिलता रहता था। परंतु, 22 दिसंबर की सुबह हरिधाम से प.पू. प्रेमस्वामीजी का फोन पर प.पू. गुरुजी को संदेश आया—

**गुरुजी, आप आज हरिधाम आ ही जाओ।**

हालाँकि गुरुहरि पप्पाजी के 105वें प्राकट्योत्सव निमित्त 24 दिसंबर को प.पू. गुरुजी विद्यानगर जाने ही वाले थे। लेकिन, प.पू. प्रेमस्वामीजी का संदेश मिलते ही प.पू. सुहृदस्वामी, संतों एवं कुछ सेवकों को साथ लेकर प.पू. गुरुजी फ्लाईट से सायं वडोदरा-हरिधाम पहुँच गये। वहाँ **ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी** के समाधि स्थल पर दर्शन व प्रदक्षिणा की और... तभी रात्रि करीब दस बजे प.पू. शास्त्रीस्वामीजी श्रीजी महाराज के चरणों में विलीन हो गये! 23 दिसंबर की दोपहर को हरिधाम के ‘हरिघाट’ पर केन्द्रों के प्रतिनिधियों की हाजिरी में प.पू. शास्त्रीस्वामीजी के पार्थिव देह को प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी ने मुखाहिन दी।

पूर्वाश्रम में सौराष्ट्र के माणावदर गाँव के निवासी पू. पूंजाभाई व पू. गंगाबा के घर पुत्र के रूप में प.पू. जयंतीभाई अर्थात् प.पू. शास्त्रीस्वामीजी ने 13 सितंबर 1940 को जन्म लिया। मेट्रिक तक पढ़ने के बाद, गुरुहरि योगीजी महाराज के प्रेमवश 25 मार्च 1961 को 21 वर्ष की आयु में रामनौमी के मंगलकारी दिन गोंडल में उन्होंने पार्षदी दीक्षा ली और 11 मई 1961 को गढ़ा में इक्यावन योगेश्वरों के साथ भागवती दीक्षा प्राप्त की।

गुरुहरि योगीजी महाराज ने उन्हें ‘साधु कृष्णचरणदास’ नाम दिया। परंतु, उन्होंने जब ‘शास्त्री’ की पदवी पाई, तब से ‘शास्त्रीस्वामी’ के उपनाम से उनकी पहचान बनी।

दीक्षा के बाद गुरुहरि योगीजी महाराज ने नवदीक्षित संतों को





मुंबई-अक्षरभुवन में प.पू. महंतस्वामीजी की निशा में रहने की आज्ञा दी थी। तब प.पू. महंतस्वामीजी के निजी सेवक के रूप में प.पू. शास्त्रीस्वामी उनके साथ रहे और **उनसे साधुता** के गुर सीख कर उनकी प्रसन्नता पाई।

गुरुहरि योगीजी महाराज की रुचि-अभिप्राय को जान कर-समझ कर काकाजी-पप्पाजी ने 1966 में बहनों के भगवान भजने की क्रांतिकारी योजना का जब आरंभ किया, तो इस कार्य को संप्रदाय की प्रथा के विलङ्घ बता कर संस्था के द्रस्टियों ने काकाजी-पप्पाजी सहित प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी के संग 39 संतों को विमुख ठहरा दिया।

गुरुहरि काकाजी ने इसे गुरुहरि योगीजी महाराज की ‘प्रसन्नता का स्रोत’ बताया और

गुरुहरि पप्पाजी ने ‘विमुख नारायण की जय’ बुलाई।

साथ-साथ समाज को समझाया भी कि—विमुख किये नहीं जाते, भक्तों के अभाव-अवगुण व टीका-चर्चा में पड़ कर विमुख हो जाते हैं।

विमुख प्रकरण के बाद गुरुहरि काकाजी के मार्गदर्शन और प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी की निशा में प.पू. शास्त्रीस्वामीजी अन्य संतों के साथ सोखड़ा के पुराने मंदिर में रहने लगे। बहनों की ‘गुणातीत ज्योत’ का निर्माण कार्य तो जारी हो ही गया था। सो, सत्संग का

विकास होने पर गुरुहरि काकाजी ने ‘सांकरदा’ में गुणातीत समाज का सर्वप्रथम मंदिर स्थापित कराया। तत्पश्चात् 1974 में ‘हरिधाम’ मंदिर की नींव रखी गई, जिसके सर्जन और आयोजन की सभी प्रवृत्तियों में प.पू. शास्त्रीस्वामीजी का अद्भुत योगदान रहा। प.पू. शास्त्रीस्वामीजी बहु प्रतिभावान थे, लेकिन



उन्होंने अपनी प्रतिभा की कभी अभिव्यक्ति नहीं होने दी। कभी भी अपना नाम, कीर्ति, मान या वाहवाही जुटाने के लिये सेवा नहीं की, बल्कि एकमात्र प.पू. स्वामीजी को राजी करने की भावना से जुटे रहे। संप्रदाय की मान-मर्यादा को संजोये रखते हुए किसे किसे सेवा से उन्होंने प.पू. स्वामीजी से जोड़ा, उसका किसी को ख्याल तक नहीं पड़ने दिया। गुणातीत साधुता का सबसे बड़ा गुण यही माना जाता है।

**गुरुहरि योगीजी महाराज का ब्रह्मावाक्य —**

बड़े पुरुष की ओर से कोई आज्ञा आये, तो ना नहीं करना। कुछ न आता हो, तो भी ना नहीं कहना। यदि ना नहीं कहेंगे, तो हम मैं बड़े पुरुष बरक़त दे देंगे...

यह उनके जीवन का आधार बना और वे **प.पू. स्वामीजी** का प्यादा बन कर जिये। प.पू. स्वामीजी उन पर संपूर्ण अधिकार करके कुछ भी कह सकते थे। उन्हें कोई भी सेवा सौंप कर निश्चिंत हो जाते थे। **प.पू. स्वामीजी** उन्हें 'किशन' नाम से संबोधित करते।

साधकों के उत्थान के लिये क्या ज़रूरी है, उसका शास्त्रीस्वामी को ख्याल था, इसलिये कई जगह वे अनुशासक बने। हेत, माया, दया एवं प्रीति में कभी खींचे नहीं गये। मुक्तों को भवित्वलुप कला सिखाई। **विभिन्न सेवाओं में साधकों को मार्गदर्शन दिया।**

यूँ अत्यधिक सहजता, सरलता से मंदिर की प्रवृत्तियों में खयं व्यस्त रहे और अन्यों को भी रखा। परंतु भीतर से तो निवृत्त जैसे रहे। उनका संग सबको ज़ंचता था। **उनके दिल से कोई हटता नहीं था, क्योंकि मातृत्व का वे खरूप थे।** अपने प्रेम से उन्होंने सबको साधुता का पाठ पढ़ाया। किसी भी सेवा में उनके मुख पर थकान या अरुचि दिखाई नहीं दी। प्रत्येक परिस्थिति में वे समता से जिये। प्रसंगों को हमेशा साधक की अदा से निहारा।



गुरुहरि काकाजी के प्रति उन्हें विशिष्ट लगाव था, उनकी कई स्मृतियाँ ईदम् थी। 2013 मार्च में प.पू. गुरुजी के प्राकट्योत्सव निमित्त वे दिल्ली मंदिर आये थे। तब दो-तीन दिन सभा में उन्होंने गुरुहरि काकाजी एवं प.पू. गुरुजी के कई प्रसंगों का स्वमुख से लाभ दिया। निम्न प्रसंग गुरुहरि काकाजी के साक्षात्कार को प्रमाणित करता है—

**प.पू. शास्त्रीस्वामीजी** के शब्दों में ही पढ़ें—

“अक्षरभुवन (दादर-मुंबई) में हम, गुरुजी सब साथ में रहते थे। एक बार बरसात के मौसम में बापा वहाँ आये हुए थे। वहाँ का हाँल एल आकार का था और उसके एक कोने में कपड़े सुखाने के लिये तार बांधे हुए थे। दोपहर को मैं सूखते हुए धोती-गातरिये को आगे-पीछे करने गया कि थोड़ी ही देर में काकाजी प.पू. प्रमुखस्वामी महाराज के साथ बात करते हुए उस ओर आये। उन्हें ख्याल नहीं था कि मैं कपड़ों के पीछे खड़ा हूँ और मुझे भी ऐसा नहीं था कि छिप कर उनकी बातें सुननी थी। परन्तु वहाँ से जाने में मुझे हिंकिवाहट हुई। तब मैंने सुना कि वे काकाजी से कह रहे थे कि पुराने हरिभक्त कहते हैं कि दादुभाई योगीजी महाराज की महिमा गाकर शास्त्रीजी महाराज को गौण करते हैं। यह सुन कर काकाजी खूब हँसे और बोले कि मुझे भी ख्याल है कि वे ऐसा कहते हैं। पर, मुझे योगीजी महाराज ने साक्षात्कार करा कर अक्षरधाम का जो दर्शन कराया, उसमें अक्षरधाम के तख्त पर जो महाराज थे, उनकी जगह पहले शास्त्रीजी महाराज आये और फिर योगीजी महाराज आये। यूँ तीनों का मुझे दर्शन हुआ है। इन तीनों में मुझे कोई भेद दिखाई नहीं दिया। सो, मेरे अंतर में जो भेद था, वो उड़ गया। संस्था में हम सबको आपकी आज्ञा में रहना है, तो जैसा आप कहोगे वैसा करूँगा। यह सुन कर प.पू. प्रमुखस्वामी महाराज एक भी शब्द बोले बिना वहाँ से चले गये।”

उनकी चुप्पी ने ख्याल दे दिया कि गुरुहरि काकाजी ने ‘योगी भगवान हैं...’ का जो बिगुल बजाया था, उसमें संशय की कोई गुंजाईश ही नहीं थी।

इसी प्रकार, **प.पू. शास्त्रीस्वामीजी** द्वारा बताया अन्य निम्न प्रसंग प्रतीति करता है कि

कई सात्त्विक भावों को वे साधुता की शान मानते थे, पर दरअसल साधक के लिये वो बाधालूप हैं।



તુસકા દર્શન કરા કર ગુરુહરિ કાકાજી ને તુસકો ટાલા ભી।

“શાસ્ત્રી બનને કે દ્વિતીય ખંડ કા એક વર્ષ ગુરુજી કા બાકી થા। સો, ઉનકી જોડ મેં એક મહીને કે લિયે મેં તાડુદેવ ગયા।

એક દિન કાકાજી ને મુજજસે કહા— એકાદશી આ રહી હૈ। તુમ કિસ પ્રકાર એકાદશી કરતે હો? મૈંને કહા— ઉપવાસ મેં મેં કુછ નહીં લેતા।

તબ કાકાજી ને કહા— એક કામ કરના, તુમ એક બાર તો શરબત પીના।

કાકાજી ઔર સ્વામીજી સત્ત્વગુણ કે કટ્ટર વિરોધી થો। બાહર જગત મેં સત્ત્વગુણી હોના એક ઉપલબ્ધિ કહા જાયે કી ફલાં વ્યક્તિ અચ્છા હૈ। જબકી ઇન દોનોં વિભૂતિયોં કો ઇસકી કોઈ અહિમિયત નહીં થી।

કાકાજી ને મુજજસે કહા— તુમ સત્ત્વગુણી હો।

મૈંને કહા— આપ કુછ પ્રકાશ ડાલેં, તો સ્વાલ આયે કી સત્ત્વગુણ ક્યા હોતા હૈ?

ફિર જબ એકાદશી આઈ, તો ઉસ દિન સુબહ તાડુદેવ મેં સોનાબા કે પૈત્રિક ભાઈ ગોવિંદ મામા ઔર અંબરીષભાઈ તાડુદેવ આયો। વે મલે સોનાબા કે રિશ્ટેદાર થે, લોકિન વે સંસ્થા સે જુડે હુએ થો। સો, વે ધર્મ-નિયમ કે પદ્કે થો।

કાકાજી ને તો ઉન્હેં પ્રેમ સે કહા— ઓહો, મામા આપ માંજે સે મિલને આયો।

આપ ક્યા લોગે?

ઉન્હોને કહા— આજ તો એકાદશી હૈ।

કાકાજી ને કહા— કુછ ફલાહાર તો લોગે?

ઉન્હોને કહા— હા�, વો લૂંગા।



કાકાજી ને કહા—ફલારી ફાફડા લોગે ન? ઉનકે આને સે પહલે નીચે કોઈ ફાફડા બેચને આયા થા, તો કાકાજી ને રાજુભાઈ ભટ્ટ સે કહા કી ફાફડા લેકર રસોઈ મેં આના। મુજ્જે મન મેં હુઆ કી મલા ફાફડે ભી ક્યા ફલારી બનતે હોંગે? એક તો સમાજ મેં હમારી એસી છાપ થી કી યે બાજાર કા સબ ખાતે હોંને। પર, મેં કુછ બોલા નહીં, ફાફડા આને કે બાદ





काकाजी ने मुझे वो प्लेट में लगा कर लाने के लिये कहा। वह हाँल में काकाजी को देकर मैं रसाई में चला गया। दरअसल काकाजी को मुझे एक दर्शन कराना था। तो, काकाजी ने मुझे बुला कर कहा—

हमारे पाटीदार में एक रिवाज है कि जब तक मेहमान भोजन करे, तब तक वहाँ बैठना चाहिये। तो तुम्हें यहाँ बैठना चाहिये।

मैं वहाँ बैठा रहा। गोविंदभाई वगैरह ने नाश्ता किया और काकाजी के चरण स्पर्श करके चले गये। रात को काकाजी ने मुझसे पूछा—तुझे सत्त्वगुण का ख्याल पड़ा?

मैंने कहा— नहीं।

काकाजी ने मुझसे कहा—देख, उन्होंने फाफड़े खाये न! खिलाने वाले ने खिला दिये और खाने वाले ने खा लिये, पर बीच में तू हिल गया, वह सत्त्वगुण!

यूँ, गुलहरि काकाजी ने प.पू. शाळीस्वामीजी के जरिये साधक के जीवन में बाधारूप होती बारीक-बारीक कणियों से हमें अवगत कराया और... कोटि-कोटि धन्यवाद प.पू. शाळीस्वामीजी को कि समय-समय पर उन्होंने साधक वर्ग को वो परोसा। फलस्वरूप हमें अपने प्रगट प्रभु एवं सत्संग को दिव्यभाव से निहारने की दृष्टि मिली है।

गुणातीत समाज के शिरछत्र एवं हरिधाम मंदिर के प्राण समान ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी को स्थूल देह से अंतर्धान हुए छ: महीने भी नहीं हुए, तब प.पू. शाळीस्वामीजी का अक्षरनिवासी

होना, केवल हरिधाम-सोखड़ा मंदिर के लिये ही नहीं, बल्कि समग्र गुणातीत समाज के

लिये भारी खोट कही जाये। इस कमी की पूर्ति तो संभव नहीं, लेकिन उनके नक्शेकदम

पर निरंतर चलने का प्रयास ही उन्हें जीवंत रखने का साधन है और सच्ची

श्रद्धांजली भी कही जायेगी...

Statement about ownership and other particulars about newspaper—

‘भगवत् कृपा’ (Form IV Rule 8)

1. Place of Publication	:	Yogi Divine Society, 'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52
2. Periodicity of its Publication	:	Bi-Monthly
3. Printer's Name	:	Prabhaker Rao
4. Nationality	:	Indian
Address	:	'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar - III, Delhi-52
5. Publisher's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	
6. Editor's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	
7. Owner's Name	:	Yogi Divine Society
Nationality	:	Indian
Address	:	'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052

I, Prabhaker Rao, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Date: 21 February, 2022

Sd/- PRABHAKER RAO  
Signature of Publisher

ब्रतोत्सवसूची

- (1) दि. 27.2.'22, रविवार — एकादशी, ब्रत
- (2) दि. 1.3.'22, मंगलवार — महाशिवरात्रि ब्रत
- (3) दि. 3.3.'22, गुरुवार — प.पू. गुरुजी की 85वीं प्राकट्य तिथि
- (4) दि. 7.3.'22, सोमवार — गुरुहरि काकाजी महाराज का स्वधामगमन दिन
- (5) दि. 13.3.'22, रविवार — प.पू. गुरुजी का 85वाँ प्राकट्य दिन
- (6) दि. 14.3.'22, सोमवार — एकादशी, ब्रत
- (7) दि. 17.3.'22, गुरुवार — होली, अनादि महामुक्त भगतजी महाराज की जयंती
- (8) दि. 18.3.'22, शुक्रवार — धुलेन्डी, संतभगवंत साहेबजी का प्राकट्य दिन
- (9) दि. 28.3.'22, सोमवार — एकादशी, ब्रत
- (10) दि. 10.4.'22, रविवार — रामनौमी, भगवान् स्वामिनारायण जयंती

R.N.I. 28971/77 (Air Mail)

‘Bhagwatkripa’ Bimonthly Magazine—Despatched on 15th of alternate months

If undelivered please return to :—

Printer, Publisher, Editor : SHRI PRABHAKER RAO FOR YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI

‘Taad-dev’, Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 4709 1281

Printed at : D.K. FINE ART PRESS (P) LTD., A-6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052